

॥ त्रैलोक्यविद्यानयनविधिर्द्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
घात्रामुह्यत्रिकाय ॥ त्रैलोक्यविद्यानयनविधिर्द्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
पुधनिकान्तर् ॥ ॥ त्रैलोक्यविद्या ॥ त्रैलोक्यविद्यानयनविधिर्द्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
धिकात्रपत्रायै त्रैलोक्यविद्या ॥ त्रैलोक्यविद्यानयनविधिर्द्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
त्रामुखीकींहीमहीषलीवमरपिवरनुनुत्रवररुद्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
द्वैतद्वैतत्रयकारुद्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या

सतत्त्वाधिकात्रयकींहीमहीषलीवमरपिवरनुनुत्रवररुद्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
त्रैलोक्यविद्यानयनविधिर्द्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
सर्वत्रयकारुद्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
त्रैलोक्यविद्यानयनविधिर्द्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
पत्रामुखीकींहीमहीषलीवमरपिवरनुनुत्रवररुद्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या
त्रैलोक्यविद्यानयनविधिर्द्वैतद्वैतत्रयकारुद ॥ त्रैलोक्यविद्या

सर्वतत्त्ववर्णीकन (८५) चाटनोन्मानल समस्तकर्मप्रवर्ती
तांहुंयानो ३॥ ॐंज सर्वमाद्यमाह गुरुहृदयपत्रमसिद्धिहुं ना
हिन (८६) ३॥ ॐंज पत्रकर्म कृदनकन स्वकर्मसिद्धिक
नहुं ३॥ ॐंज मारुली वचनं वृहदुपां ॥ ॐंज स्वलु ॥
अथमारुत्व (८७) ५ यत् ॥ ॐंज अद्यान अमाद्यवनदविमल
व्याज्रैव क्रायली विश्व ३॥ ॐंज गल ॥ ॐंज अद्यान अमाद्यवन

दविमलव्या कं माहव्यत्रीपां ॥ ॐंज ॥ ॐंज अद्यान अमा
द्यवनदविमलव्या चं को पात्रिपां ॥ ॐंज ॥ ॐंज अद्या
न अमाद्यवनदविमलव्या वेष्टवीर ॥ ॐंज ॥ ॐंज अद्यान
अमाद्यवनदविमलव्या वागाहिर ॥ ॐंज ॥ ॐंज अद्याने
अमाद्यवनदविमलव्या उडालीर ॥ ॐंज ॥ ॐंज अद्यान
अमाद्यवनदविमलव्या नासुलीर ॥ ॐंज ॥ ॐंज अद्यान अमा

धा वज्रदविमल श्यामहा लक्ष्मीर ॥ चसपाल ॥ ॐ निमालुख
पु ॥ ॥ ॐ नमः श्यामलुखये ॐ ललाट ३ ॥ ॐ नमः उरु कं ॥ ॐ
कं ॥ ३ ॥ सचा ॥ ॐ नमः कलित शिखर ॐ शिखायां ३ ॥ ॐ नमः विद्यु
ति ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः तालकाक्षि ॐ ननुया ३ ॥ ॐ नमः पिंगल
श्रुवश्रुम ॥ ३ ॥ ॐ नमः शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ उरु
यां ३ ॥ ॐ नमः विकनदं ॐ दं ॐ ३ ॥ ॐ नमः कुरु ॐ नमः ३ ॥

याः ३ ॥ ॐ नमः शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः
हस ॐ नालुम ॥ ३ ॥ ॐ नमः शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः
विष्ट ॐ शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः
वर्तनीनी ॐ शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः
कु ॐ शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः
शी ३ ॥ ॐ नमः शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥ ॐ नमः शिखां ॐ शिखां विकनदं ॐ जिह्वायां ३ ॥

नें ज्ञासनि रहुं दक्षिण नो ३॥ नें ज्ञासनि रहुं वा मा नो ३॥
नें ज्ञा विडा वनि रहुं उपलब्ध न दयाः ॥ नें ज्ञा कानि रहुं द
क्षिण ज्ञा घायी ३॥ नें ज्ञा मानि रहुं वास जा नो ३॥ नें ज्ञा संजी
विनी रहुं दक्षिण ज्ञा घायी ३॥ नें ज्ञा हनि रहुं ज्ञा घायी ३॥ नें
ज्ञा लित्ति रहुं दक्षिण गुल्फ ३॥ नें ज्ञा पुत्रि रहुं वास गुल्फ ३॥
नें ज्ञा पुत्रि रहुं दक्षिण वास ३॥ नें ज्ञा न मा मा ह गल्ल न्हुं वा

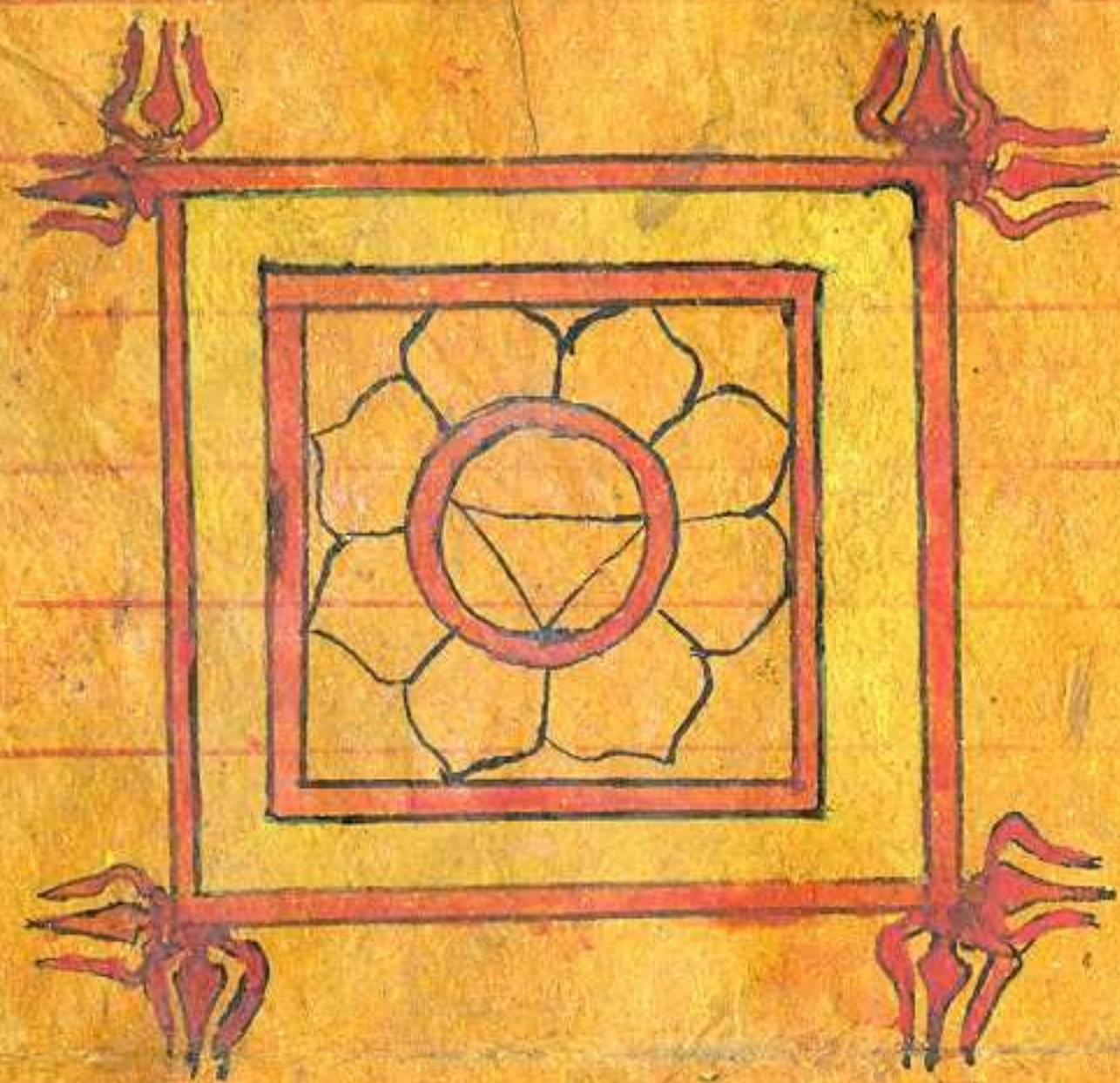
मपाद ३॥ नें ज्ञा वासु (सु) वन द विस्तर ॥ पादौ गुन न मनु ल
बलिं गृह्ण र स्वाहा ॥ स्याः ॥ ॐ ति त्रि त्वन्मन्या स न (सु) ध
यत् ॥ ॥ अथ नु का रु नीं (सु) ध ॥ नें ज्ञा जीं जा तां पुठ दयोः
३॥ नें ज्ञा जीं मुख ३॥ नें ज्ञा यं न नु य ३॥ नें ज्ञा सं सर्वात्मन ३॥
नें ज्ञा कर्ण दय ३॥ नें ज्ञा अः पाद दय ३॥ ॐ ति नु का रु त्रिं (सु)
धः ॥ ॥ नें ज्ञा अं ल ला ट ३॥ नें ज्ञा ॐ क (सु) ३॥ नें ज्ञा उ

मुख ॥ नें ज नं गुच्छ ॥ नें ज जों पाद द व ॥ बी ज यं च कं न्या
स ॥ ॥ अथ छ छि ष द्वा सः ॥ नें ज छ छिं कूं म रुका
त्रिका ये जों लूं क ना धि । तां सीं सूं स्मां विष्णु द्वि सा किं ल्थे
इ प्र कृ ति पु । श्री ख श्री ल न न द व ॥ ॥ कं ॥ नें ज घा न
अ घा ना घा ना मुखी व ह नू पा ये सूं मे न्ना धि कां कीं दूं मूं
अ ना ह न का कि न्ये य गु ल पु त्री विष्णु न न द व ॥ हृदि शूं

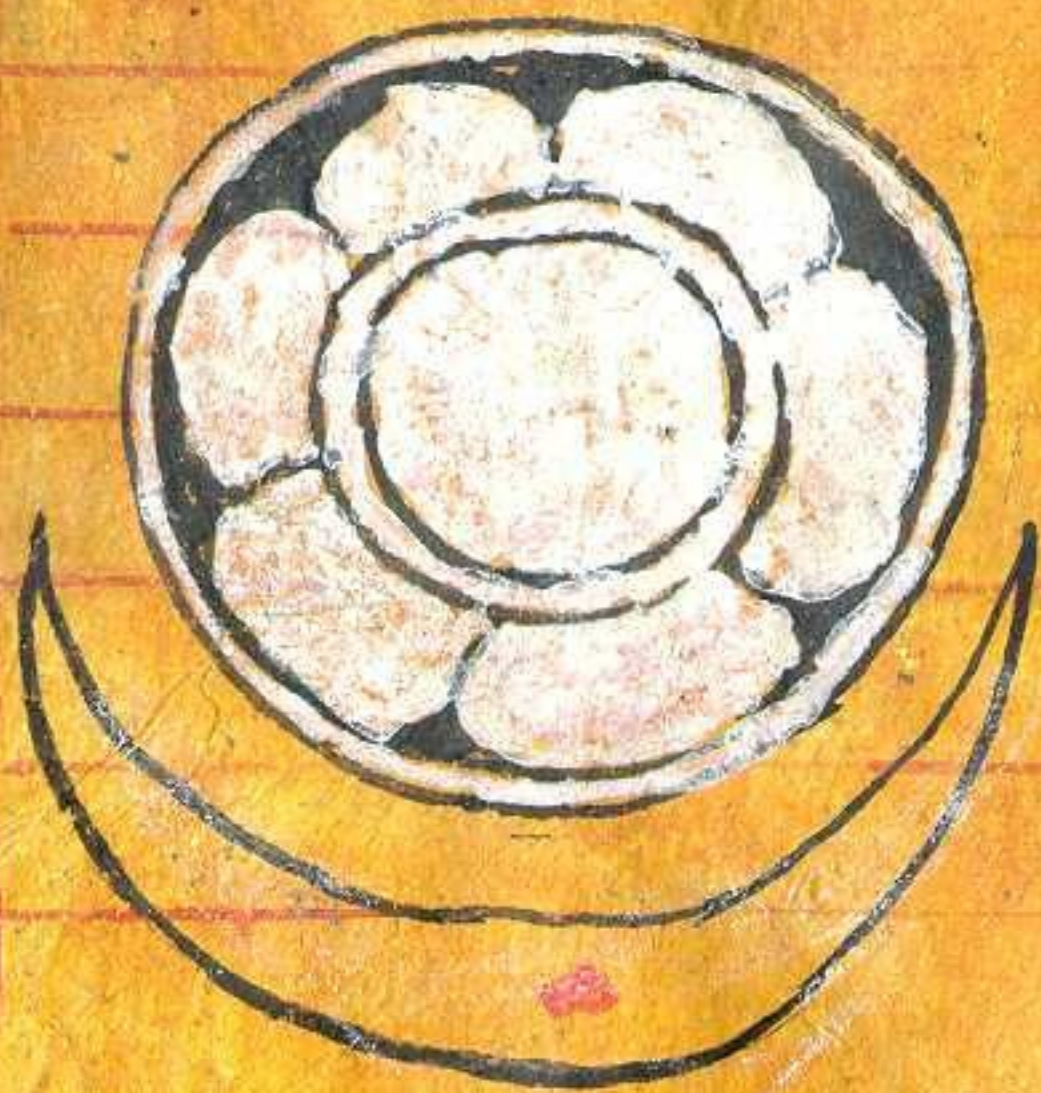
॥ नें ज जों छिं दूं व र्व ल ह्ति ख हूं पूं व लूं धि लां लीं लूं लूं
म नि पू त्र क ला किं ल्थे म हा पु त्री अं था सा न न द व
॥ ना हो ॥ नें ज थूं कृ द्वि का ये कू ल दी पा ये जों सूं प दा धि
नां नीं नूं स्मां स्मां धि स्मा न ना कि न्ये गु ल पु त्री अं नु गृ ह
ल न न द व शूं व ॥ तिं ॥ नें ज न मा ह ग व नी ह ल्क म ला
ये जों लूं नु व ना धि जों जीं पूं पूं आ रा न ज की ल्थे म न

पुत्री मित्रानन्ददव ३॥ गुठ ॥ नें ज कि ली र विच को ६ लु
ये हं नू न त्वा धि हां ही हं दू आहा हा कि ल्ये य म हा पुत्री
आ रव ली सात नद दव ३॥ ३॥ मि हा स ॥ नें ज यां यीं यं यीं
हला ट य क ली य पुत्री को लि ॥ नद दव ३॥ लला ट ॥ ३॥
०० तिज ठि पं ॥ ॥ अथ षड् कल गिरवी ॥ ६॥ ध य ३ ॥
आरा न कं च रुई ल तुल तुचिः वा सा न व ली ॥ या, ला धि ॥

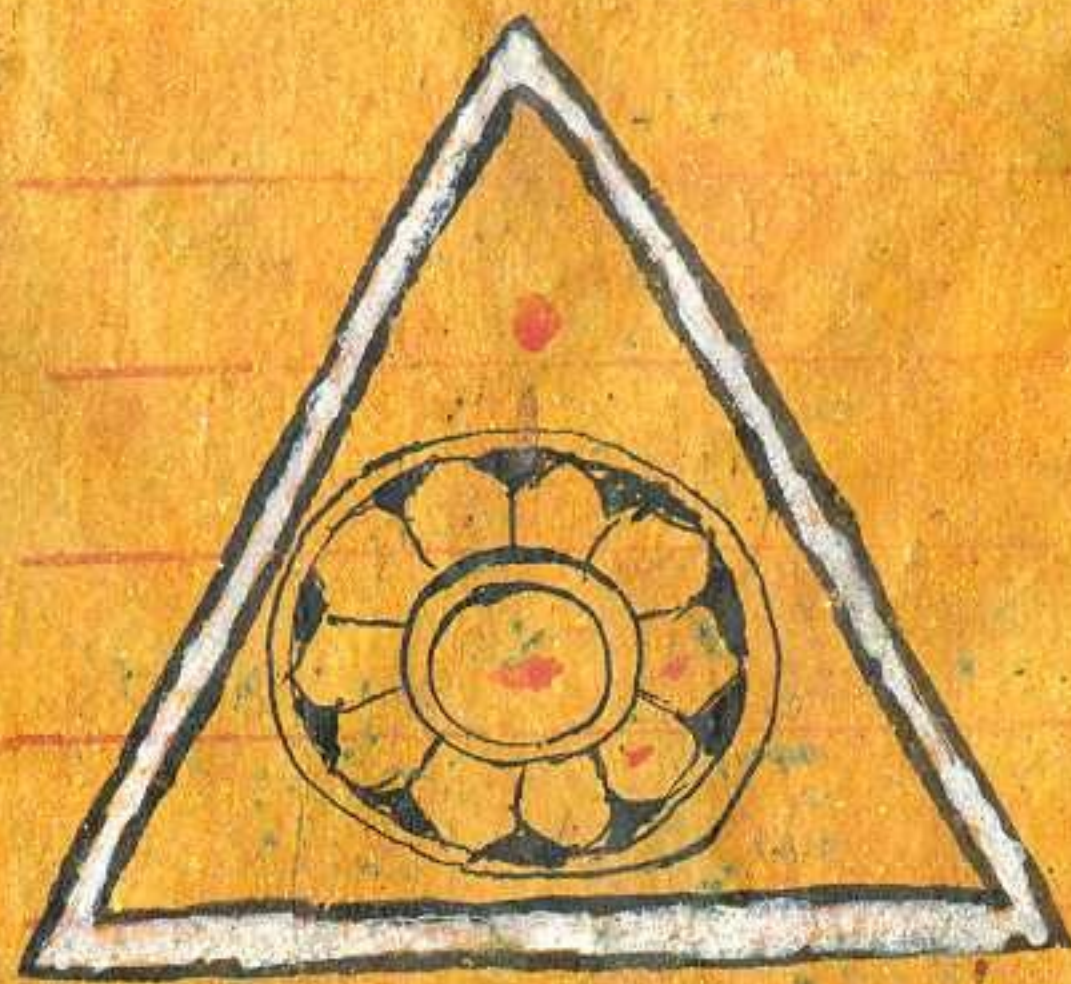
नम न रु वि दू म नि रै वा ला क ष ष यु कं । न त्वा रै म नि ए न
कं द ल द लं ज षुं रु का ना कि कं । प उ र्दा द ल रि ल्ता रु
न पु नं का शं थ का ना क कं ॥ मा ग्रा रि ई ल षा ज (ले वि वि षा द नु क
या ति वि वि षु डी मु जं, रु कं ०० स क न द ल द य रु नं न त्वा रु मा
हा पु नं । न त्वा दू र्द म (ध मु र्दे वि क मि तं प र्श स रु म्रा दू जं
नि यान न द म चं स दा गि व ए नं किं न मः सा ध्य तं ॥ गु ठ लान ॥



नमः शिवाय ॥ नेत्रांजीया
 नमिः ॥ ॐ जीं जीं जीं श्रुं श्रुं श्रुं
 ली त स्वाध्यासं नमः
 मगतं स्वस्वकुक्षिं आरात्
 चक्रं नमः ॥ नमः गव
 तिष्ठत्कमलाये नमः ॥



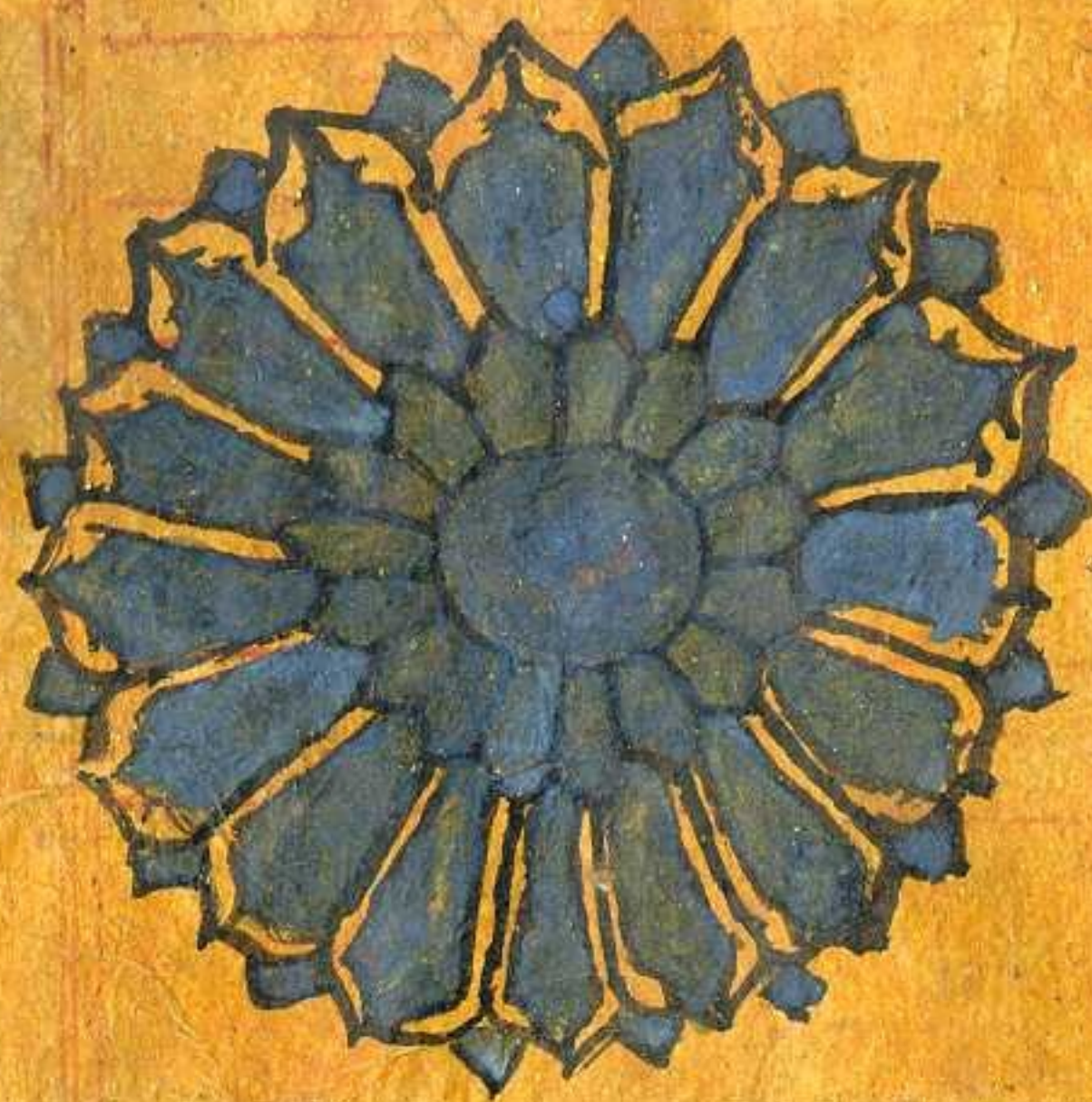
बुद्धादवनाहमवर्त्त ॥ ॐ वं वं वं
 सं पां प ॥ लिं ॥ स्वाधिष्ठा न च
 कार ॥ ॐ नी जालं नमः ॥ ॐ
 गीं नमः ॥ गीं नी ली ये नमः ॥
 बुद्धिं नमः ॥ कृत्वा नमः ॥
 नमः ॥ ॐ नमः ॥



ल दी पाये जीं त्रि स स्वाहा ॥ विष्णु
 द वं ताष्टु कव लू ॥ जीं वं हं मं यं नं
 लं पां पू ॥ हृदि ॥ म नि पु त्र क च क्रा
 य र ॥ नें ला पू लू गी त्रि पि ॥ १० लां लिं
 लूं लूं ला कि ला य पू व लूं धीं ॥ अ
 हं का ॥ त्र ल क मां स धा तु न म नि पु



त्र क च क्रा ज न र ॥ नें जां जीं हूं व
 च ल नि ख हूं नि स्वा ये वो व ह ॥ नु
 उ द व ता न क व लू ॥ धां उं हं लं
 तं थं दं धं नं पं हं पां पू ॥ कं ॥ १० ॥
 नें अ ना रु त्र च क्रा र ॥ त्रि ला का म नृ प
 पि ॥ १० कां किं कूं कूं का कि ला मूं क ला
 धीं प्र कृ ति त ल ॥ त्र द धा तु न् अ



नाहन चक्र कानन ॥ नें घानत्रधा
 नत्रधानामुखीकं कवचाय हूं ॥ ॐ
 धनमवताहनीनवर्क ॥ खुं कं रवं
 गं घं ढं चं कं जं सं कं टं ० पां प
 ॥ गह ॥ विष्णु द्वचक्रानन ॥ नें घी पृथ्वी
 गिनिपि ० सां सी हूं सां साकिनीय

गूं कला धी पुनुषत सत्रलि धा
 तुन् विष्णु द्वचक्र कानन ॥ नें कों
 कों कूं मरुं कानिका ये जां नत्रु
 याय वो षट् ॥ सदा निवदवता
 नीनवर्क ॥ खुं सीं नूं शीं ॐ वं
 उं कूं मूं जूं टं जूं गूं नूं डां जो नूं नूं ॥



हलात स॥ नं निन ऊन चकार ॥ नं
 उजीयान पि ॥ ० ॥ जं जीं हूं हूं जां जां कि
 लीय नूं उवना धी मन त ॥ त्व कि
 निर विच का क लाय ऊः रु ट् का म न
 प पि ॥ ० ॥ हूं हूं हूं हूं हा कि ली द
 वी नूं त त्या धी गा ग ॥ त त्व म ह्री धा

निर्वाण मते

उ न श्ला च का य २ ॥ नि नं ऊ न स्व त ॥ न क ॥ नं ह्रीं ह्रीं हूं
 हूं पां प ॥ हूं स हूं कं पा प ॥ ॥ ॥ अ थ द्वा द श ॥ ह्रीं कं
 न्या स ॥ हूंः अः प नान न्द हूं अः सिद्धा द न क ली हूंः ॥ ॥ प नी
 प न हूं हूं हूं हूं हूं ह्रीं क ला मि क पां प ॥ पा दो ॥ ॥ उं उं का
 न नु ड हूंः हूं उंः नि द्वि वे ना धि त हूंः मं नि ना हूं न हूं हूं
 हूं हूं हूं ह्रीं क ला मि क पां प ॥ जा नो ॥ ॥ हूंः ॥ ॥ न

प्रकान्त कुरुः ॐ हं ॐ मही चिकहः नृसृष्टि गनहं
ऊँ हं हं नृं श्री कला चिक पां पू ॥ इत्युत्था ॥ ॥ हंः अः
कल गुञ्जा नृ नृहः ओ कल लला चिकहः अकल लनि
हं ऊँ हं हं हंः श्री कला चिक नी पा पू ॥ गुञ्जा ॥ ॥ हंः
कं कमल दीप हः एवः कल नाहिः ॥ गहः गका नृ नृहं
ऊँ ऊँ हं हंः घञ्जा नृ नृ नि नि व पां पू ॥ नाहो ॥ ॥ हंः हंः

विहृ म्मा लहः चक्र दाद क्षा नृ धर्मि लीहः कृ पाप हं नृ
हं ऊँ हं हं हंः अञ्जा काम धत्री पां पू ॥ हृदि ॥ ॥ हंः
नृ कं लहृ ॥ गहः अल्लता मृता न्म क हं ऊँ हं हं हंः ० श्री एव
॥ गहृ नी पां पू ॥ कं हं ॥ ॥ हंः ॐ हं हं का नृ नृ क हं हंः उः मु
एव हृ एव नृ नृ हः लञ्जा नृ नि नी हं ऊँ हं हं हं नः श्री काल ह
त्रि पी पू ॥ मुख ॥ ॥ हंः थं काल धर्म नि हः दः अग्र

हृदः स श्री कल ध्वनी पां प ॥ हिननि ॥ ॥ ननावगिता
 केनलुङ्गध ॥ उरु प्रचलिका क पां प ॥ चसपाल ॥ ॥
 मां वृक्ष न (ध्व) ॥ रं ललाट ॥ गंदक न उ ॥ वं वाम न उ ॥
 ॥ ति ना सा पु न ॥ कुं मुखि ॥ कूं चि वि क ॥ वि द क क (ध्व) ॥
 कां वाम न उ ॥ यं कं द द य ॥ जं ह द य ॥ जं द क रु रु ॥
 हं वाम न उ ॥ घं द किल कं द ॥ गं वाम कं द ॥ जं ना रु ॥

घाँ त्रिहं (ग) २॥ त्रं कंदो २॥ त्रं मुलादा २॥ घाँ दक्षजानो २॥ त्रं
 वामजानो २॥ मुंदकिलपादो २॥ त्रिं वामपादो २॥ त्रिं नो लक्ष्म
 २॥ त्रिं गलदक्षपा २॥ किं गलमामपा २॥ त्रिं ठ लत्र
 दक्षपा २॥ किं उलत्रवामपा २॥ त्रिं ए हवसु २॥ विंदक
 पादान् २॥ त्रिं वामपादान् २॥ त्रिं वनि सिं न्या सु हवकाय
 ३॥ ॥ अथ निर्वर्णनं ॥ अथ यत् ॥ त्रिं गगलनन्ददवर

३३

॥ प्रो नपाद ॥ ॥ त्रं नकुमुदा ४॥ जानो ॥ ॥ त्रं नपमानन्द
 ४॥ त्रिं (ग) ॥ ॥ त्रं नहैलवा ४॥ त्रिं नारि ॥ ॥ त्रं नदवानन्द
 ४॥ हृदि ॥ ॥ त्रं नकमला ४॥ क (ग) ॥ ॥ त्रं ननिवान
 नन्द ४॥ गालु ॥ ॥ त्रं नगामानन्द ४॥ विनु ॥ ॥ त्रं नकु
 नन्द ४॥ त्रिं न ॥ ॥ त्रं ननवकान (ग) ॥ ॥ पुनः नि
 वीन विस्वमकुल ॥ त्रं नो यः त्रिं नारि ॥ ॥ त्रं नो प्रो
 ॥ अथ यत् ॥ हृदि ॥ त्रं नक (ग) ॥ ॥ त्रिं नकुल (ग)

ध्व॥ श्रीं॥ उ॥ प्र॥ पां॥ पू॥ ॥ अं॥ गु॥ ह॥ च॥ न॥ न॥ ॥ गु॥ रू॥ ॥ जा॥ नो॥ ॥ लिं॥ ग॥
 ना॥ हि॥ ॥ क॥ ल॥ ॥ ना॥ लु॥ ॥ र्ग॥ ग॥ न॥ ॥ म॥ क॥ क॥ ॥ लि॥ खा॥ ॥ द॥ व॥ स्का॥ न॥
 ॥ ॥ अ॥ थ॥ नि॥ र्वा॥ ल॥ प्र॥ का॥ न॥ ॥ स्त्रीं॥ पां॥ पू॥ ॥ पा॥ द॥ ॥ गु॥ ह॥ ॥ पा॥
 द॥ द॥ यं॥ ॥ पा॥ द॥ ए॥ ह॥ ॥ गु॥ रू॥ ॥ जं॥ घ॥ ॥ जा॥ नु॥ ॥ उ॥ जो॥ ॥ म॥ ध्र॥ ॥ ना॥
 हो॥ ॥ उ॥ द॥ न॥ ॥ हृ॥ दि॥ ॥ क॥ ल॥ ॥ ना॥ लु॥ ॥ ना॥ सा॥ ग॥ ॥ च॥ ह॥ ॥ सु॥ र्व॥
 ॥ लि॥ न॥ ॥ लि॥ खा॥ ॥ ॐ॥ ति॥ अ॥ स्का॥ द॥ व॥ स्का॥ न॥ ॥ ध्व॥ ॥ ॥ अ॥ थ॥

सर्ववि काज ॥ झींरुं झीं ॥ पाद ॥ जानी ॥ सिंग ॥ नाहि ॥ हृदि ॥
कं ॥ ना ॥ विनु ॥ सिन ॥ सिखा ॥ उबंद स स्फान ॥ ध
य ॥ झुं ॥ निखा ॥ विनु ॥ हृदि ॥ नाहि ॥ गु ॥ जानु ॥ पा
द ॥ या ॥ निर्वल षङ्ग ॥ ॥ षट्दर्शन मन्त्र ॥ ध ॥
हुं हं स ॥ झुं ॥ या ॥ निनस ॥ ध ॥ ॥ हुं हों हिं हीं हूं
हूं हहे हो हो हूं हूं ॥ षट्दर्शन सि दान ॥ निनस

ॐ नमः ॥ ॥ ॐ हं कं इ हस क म ल व न यं ॥ न न न न न न
न न ॥ ॥ ॐ हं कं इ हस क म ल व न यं ॥ न न न न न न
ॐ क व न यं ॥ ॐ कं इ न न ॥ ॐ कं : न क म ल व न यं ॥ ॥ न
न म ल व न यं ॥ ॐ कं इ न न ॥ ॐ कं : न क म ल व न यं ॥ ॥ न
व न यं ॥ ॐ कं इ न न ॥ ॐ कं : न क म ल व न यं ॥ ॥ न
न क म ल व न यं ॥ ॐ कं इ न न ॥ ॐ कं : न क म ल व न यं ॥ ॥ न

ॐ नमः ॥ ॥ ॐ हं कं इ हस क म ल व न यं ॥ न न न न न न
व न यं ॥ ॐ कं इ न न ॥ ॐ कं : न क म ल व न यं ॥ ॥ न
न म ल व न यं ॥ ॐ कं इ न न ॥ ॐ कं : न क म ल व न यं ॥ ॥ न
न क म ल व न यं ॥ ॐ कं इ न न ॥ ॐ कं : न क म ल व न यं ॥ ॥ न

नञ्चा नञ्चा नामुखी चो चो किलीर विचर ॥ ॥ ब्रुं ह
दयाय नमः ॥ उवं कुमल पङ्क ग ॥ ॥ नता आवल विद्या जा
जयत ॥ ने ब्रुं कीं कु वि का ० ० रुम लु ले आगच्छ र कीं आव
लय र व ध य र स ॥ नम स्वा हा ॥ त्रि त्र नि जा प ॥ कीं ब्रुं कीं
॥ ता ० न ॥ पू ० न ॥ वि तु ॥ ॥ कुं ह ॥ २ वर्ष २ अमृत मेघ
की मर्म मर्म म हात्र रु लि स र्वा प्र ड व ना सम रु न रु रु

स्वा हा ॥ अर्घाद कल त्रि त्र नि प्रा रु ली ॥ कीं वर्ष २ म घ कीं ॥ जा
प ॥ १० आ प्याय नं वि चिं त्र ॥ कुं कीं त्रि त्र नि ॥ कीं प्र व कु ॥ ह
प्र आ ह दि ॥ ७ न स्तान वि न्य स पू ऊ नं वि नुं द या न ॥ कुं
कीं कीं पूं ह पूं आ ॥ पा णी वृ ण ध्या य स्वा हा ॥ जा प १० ॥
जा प पु ष्य त्रि त्र नि ध य न ॥ कीं कीं ७ पूं कीं ह ॥ ०० दं आ
व ॥ ११ न पू ऊ नं ॥ त्रि व न त्व व ध प्र व क्षा मि म हा पा त

कनासनं ॥ वधप्रहर्तिना ॥ ॥ कुं कुं वमुडाह्वायं
रुद्रं रुद्रं स्वाहा ॥ मुडाह्वायं ॥ ॥ हुं हुं मुं चर स्वाहा
॥ मुं च विद्यायाताजनं ॥ ॥ कुं कुं कलसाहिषकय रडो हुं
रुद्रं स्वाहा ॥ कलसाहिषकः ॥ अर्घपाग्रीदकनप्राकृती ॥ ॥
ॐ असं हं कुं हुं कृत्तिकाय आगच्छ र आ वल य र वध
य आ वल कुं यति ॥ ॐ दं वल वधमकुलपूजनं ॥

आ वल ॥ ॥ कुं कुं कलसाहिककय रडो हुं रुद्रं स्वाहा
॥ कलसाहिषकः ॥ ॥ पुनः क्षिप्रक्षिप्रसिम्ह लषठं ग
लपूजयित्वा ॥ हस्तचक्षुषयित्वा ॥ ॥ नवास्त्रामूल
षठं गनपूजयत् ॥ हस्तोज्ज्वलनावधपूजयत् ॥ नग
अकृत्तिकाहुं रुद्रं मम सर्वपदवान् यनुमनुचक्षुप्रया
गादिको न्येन कृतान् कालोपं ता कश्चिप्यं किता न सर्वान्
हन रडं शाकला लिङ्गे कुं कुं रुद्रं शुक्लकृत्तिका अष्टदूति

श्रुत्वा पांशु ॥ ॥ पुनस्तु लषजंगन साधयत् ॥ नित्रसि
पुजयत् ॥ ॥ कुं म हा विद्यां नित्रसि पुजयत् ॥ आवाञ्च
॥ यानि सुडा दक्षयत् ॥ जाप ॥ रुं ह स्वा हा ॥ त्रु हा रु त्र ॥ जाप
त्रु न सि ष नित्रसि ॥ स्फोटं ॥ म हा मा या ॥ त्रु त्र गं धा दि ॥
ॐ नि ॥ क्षा धन विधि ॥ ॥ ॥ त्रु न द न का ह मा दा य ॥ ६
कुं द ली न्या य स्वा हा ॥ मान य ॥ पु ष्पा कृ त न ना उ य ॥ ज

लय च ॥ जामनं ॥ दन का ह म नु ॥ रुं सि क ि ज्ञा न कं प द
प म नु ॥ त्रु ति ना ह रु पु मानं का त्र य ॥ उ प मि पी न चूर्ण
लि खे ॥ ॥ ॥ बु लो बु रु क थ न ॥ पू र्व त्र श्री वि जा नि या
त ॥ त्रु ॥ गत यां म ग्नि द्या त कं ॥ द कि ॥ ल म ल नं वि द्या ॥ ने
मे ल ध न हा नि च ॥ प ष्चि म च स दा दा रु ॥ वा यु य ॥ क्ष क
म व च ॥ उ रु त्र ध न ला ला य ॥ ॐ क्षा न पु स्ति व र्द्ध नं ॥ मं लु

लं च वहि गाय ॥ पुन ॐ नमो भूतदा ॥ ॥ ह रु व धा ऊ
लि व ध्या ॥ नै जीं द लि न्या ये ०० स्वा हा ॥ नृ ष ण् ष्टा णी पा
पर क ल्म य हूँ रु ण् स्वा हा ॥ ॥ नृ ष्टा णीं लोः नि मू व
न त्व या य मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ नृ ष्टा णीं हूँ रु ण् स्वा हा ॥ वि ष्ट
कृ न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ नृ ष्टा णीं हूँ रु ण् स्वा हा ॥ सु
यि न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ नृ हूँ रु ष्टा णीं मा कृ न त्व पा

प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ नृ हूँ रु ष्टा णीं नृ ष्टा णीं मा
च ना य स्वा हा ॥ ॥ नृ हूँ रु ष्टा णीं नृ ष्टा णीं मा च ना यः
स्वा हा ॥ ॥ नृ हूँ रु ष्टा णीं नृ ष्टा णीं मा च ना य स्वा हा ॥
॥ नृ हूँ रु ष्टा णीं नृ ष्टा णीं मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ नृ
हूँ रु ष्टा णीं नृ ष्टा णीं मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ नृ ष्टा णीं
नृ ष्टा णीं मा च ना य स्वा हा ॥ जा प ॥ ॥ १० लि न स ॥ ॥ नृ हूँ रु

हैः विद्या न त्व पाप माच नाय स्वाहा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ सँः
विं नु न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ कँः ब्रि
न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ सँः क स न त्व पा प
मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ लँः पु नु ष न त्व पा प मा च ना य
स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ वँः वि द्रि न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥
ॐ हँ ह्रँ त्रँः क्ष ह न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ यँ

ः बु द्रि न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ ऊँः त्र य न त्व पा प
मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ ऊ हँ च त्र पी था य स्वा हा ॥ ॥ ॐ १० सि
त्र सि ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ ऊँः आ त्म न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥
ॐ हँ ह्रँ ऊँः सा म न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ
ः पा प न त्व मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ ऊँः प त्र न त्व पा प मा
च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हँ ह्रँ ऊँः ॐ क्का न त्व पा प मा च ना य स्वा

हा ॥ ॥ ॐ हूं हूं : जु म न त्व पाप मा च ना य स्वा हा ॥ ॥
ॐ हूं हूं : च न न त्व पाप मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ पू र्ण गि त्री
पि थय स्वा हा ॥ धा त्र १० सि त्र सि त्र प ॥ ॥ ॐ हूं हूं : आ प न त्व
पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हूं हूं : रु त्व पा प मा च
ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हूं हूं : प त्र म न त्व पा प मा च ना य स्वा
हा ॥ ॥ ॐ हूं हूं : वी रू त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥

ॐ हूं हूं : अ हं का ल त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हूं हूं :
: हा ग न त्व पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हूं हूं : का य न त्व
पा प मा च ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ हूं हूं : स र्व न त्व पा प मा च
ना य स्वा हा ॥ ॥ ॐ का म नू पा य स्वा हा ॥ धा ३ सि त्र सि ॥
यु नः नि ष्य नि त्र सि मू ल षं जं (गान पू ज यित्वा ॥ सि त्व
स्वा (गु त्र त्रि त्वा त्र ज सा प न्न मं शु ल ह यं का त्र य न् ॥ म

पूर्व लक्ष्मी विज्ञानी याह आग्नेय मन्त्रिणा नमं दक्षिणे मन्त्रिणा नमं नैऋते च नमः पश्चिमे च नमः वायवे च नमः
उत्तरे च नमः ॥ इति मन्त्रः ॥ मन्त्रः ॥ पुनः सोमः ॥ मन्त्रः ॥

बुधं दं तु काष्ठं पातयन् ॥ बुधं तु रुक्मं ॥ पंचसूत्रं
वर्तय ॥ इति दं तु काष्ठं पातनविधिः ॥ ॥ अथ लिता
माला रुयन् ॥ पुनः लिखति तस्मिन् लघुषां गानजपि स्वा ॥
लित्यस्याऽग्रे अलितानजसापममसुतं कातयन् ॥ वाकिं
प्रेतलितामानय ॥ तजसापमपत्रिस्त्वय ॥ ॥ अथाप
त्रि ॥ लितामकुलपुष्पाङ्गुलिं दत्वा ॥ मनु ॥ अथ अङ्गुलिं

अङ्गुलिं लितावपातनामय ॥ अङ्गुलिं अङ्गुलिं अङ्गुलिं रुद्रस्वहा ॥
नमस्कात्रं कुर्यात् ॥ सुवर्णादिगर्वादि कं दत्वा अर्घ्यं
दत्वा ॥ अर्घ्यं दत्वा वदवत्वादि ॥ तत्र कपथि स्वा ॥ नवा
स्वा कृत्वा न अर्घ्यं दत्वा ॥ अथामात्रकापथि स्वा ॥ नमस्कात्रं
दत्वा ॥ गुत्रात्राहामादाय ॥ लितालाहयन् ॥ लिताम
कुलताउय ॥ अथ यच्च ॥ तत्रात्रिपत्रिनामय ॥ अथ

तथ्यनमस्कात्रं कृत्वा ॥ युतुंद स्वादव्यासमीपसाह्चानसु
प्य ॥ बुलु बुलु लंपनिरव्य ॥ ॥ शुभमनदाहिनचेव
अहिहि नन न लुरु । सर्वकामार्थसिद्धिः । सर्वसंपत्ति
दायकं ॥ अशुभमपुलुं पाया वृक्षहृत्थादिपातके ।
पतिनदरुपातच ॥ हसवलीदिपातकी । वामपतति
पादच । हसिचोलादिपातके पूर्व किंचित्पुलुं चेव ॥

आगत्यां अतिघातय । यममृत्पुवि जानियात् ॥ नेमसु
कलहं रुवत् । वालुलीचनगालय । वायुव्यांगगघात
क ॥ उलुलु चेव संपत्ति किंचित्सिद्धिं च वृक्षक । सिख
संमुखसंस्क्रित्वा । तिलाशुभमनलकली । दपादपतिन
यन । गालुखावृक्षघातक ॥ अलुलुं भक्ति कर्मातिऊ
पहामादिकं तथा । कोमात्री वीजमत्रायुक्तकिरुवतुनिजिगै

ॐ निसिला शुभ लविधिः॥ ॥ अथ लीख शुभ नं काल यः॥
पुनः मूलषजं गाल॥ लिष्यति न लिखे पूजयत्॥ मनुले धन्यं
स्मापयत्॥ पद्म मनुलं काल यत्॥ सुवर्ण पद्मं स्मातव्यं॥ गुरुत्वा
लं किं सुत्रं पथित्वा॥ लीख स्माप्य॥ लीख स्य मूल न त्रियां ऊर्लिंकत्वा
॥ अर्थं दत्वा॥ स्मात्र पूर्ववत्॥ नमस्कात्रं कृत्वा॥ नता गुरुनाम्ना
मादाय॥ संखस्य मूल न त्राउन मनु॥ नृज म्रां म्रीं म्रूं संखवला
न त्रामय र म्रां म्रीं म्रूं हूं रुद्र स्वाहा॥ त्रिपत्रिजाम्य॥ बुल बुल रुद्र

लं॥ निरूपय॥ अवनक्ष॥ नमस्कात्रं कृत्वा॥ गुरुत्वा लीदवा ल
य स्मापय॥ ॐ निलीख शुभ न विधिः॥ ॥ अथ च नु म लुला
लिषकं॥ पुनः लिष्य रुद्र मूलषजं गाल पूजयित्वा॥ गुरुत्वा
च नु म लुलं लिष्य रुद्र दत्वा॥ मूलषजं गाल पूजा॥ अकात्रादि रु
कात्रात्कं न च नु संपूज॥ मनु॥ अं प्रतिपदाय २॥ अं दितीया ३॥
ॐ त्रितीया ३॥ ॐ चतुर्थी ३॥ उपंचमी ३॥ दुषष्टि ३॥ अं सप्तमी ३॥ म्रूं
अष्टमी ३॥ ॐ नवमी ३॥ ॐ दशमी ३॥ नंदवामी ३॥ नृ न कादली ३॥

उदाद ला३॥ उं उयाद ला३॥ उं च तुर्द ला३॥ उं ए कि मा३॥ उंः उ
 मा वा अर ॥ उं उ हं ह पा उ हा च नु मू र्त्त य ३॥ च नु सं ए च ॥ प
 सि ख्य लि त सि ॥ न वा सा ष उं ल ल लि त स थि य क ॥ उं उ अ धा त
 ऊं हं ह ऊं हूं हूं सो ॥ उं वं म नुं प थि त्वा ॥ ना उ न स न् ॥ लि ख्य लि
 त लि च नु टा रि ष कं का त य ॥ लि ख्य न न म स्का तं कृ त्वा ॥ च नु गु
 तुं द त्वा ॥ स्व स्का न द वा ल य क्का प य ॥ लि च नु टा रि ष कं ॥

म्या

॥ अथ न्य य न उ म नं ॥ च नु गां धे न च नु त्र ष मं षु लं कृ त्वा
 ॥ नि र्वा ल म नु ल प्र ए च ॥ उं ग ग लं न न द द व र ॥ उं कृ मु द ॥
 उं ष म्ना ॥ उं हे न वा ॥ उं द वा ॥ उं क म ला ॥ उं लि वा ॥ उं त्रा मा ॥ उं क
 फा ॥ ॥ ए र्वा दि ए उ य ॥ लि ख्य रु रु ॥ लि ख्य न सि त सा क्र तिं
 कृ य्ती ॥ ॥ न ता गु नू ली हा कि ष्ट उ ल ॥ ध न वा च्छ मा नी य ॥ न
 ज सा प रि लि तं ॥ नु प प न्ना नि धा य ॥ लि ख्य न न वा सा मूल

[illegible][illegible]

मय र हूं ३२ ८ स्वाहा ॥ इं सो ॥ कुं न ग न स व लि य न न क न
नि स्वाहा ॥ ता उ न ॥ ५ प स्वा हा ॥ त्रि प नि उ म न कृ त्वा ३ ॥ ति
र य न व न ॥ य न ॥ गु गु मु खान् ॥ ति व्य कान ॥ ॥ उ अ
दि ना थ ३ ॥ उ अ उ जीं कं ईं व ली ड व ल र हूं ३ २ ८ २
रु न र वृ न र सि द्धा न क रा जीं हा म य र सा ध य र घा ष य र म हा
ना द य र ति हा न क य र प्र च तु र अ न क का टि सि द्धा नां अ
ग क य र न मा न मः ऊं जीं हूं स म य तु य ॥ नि रू प ना य ॥ पु नः

म हा नि र्वा त वृ य न ॥ गु गु मु खां गा न मा मु त ज ग ना थ ॥ अ चु ना य
अ सं र व ॥ व्य का य क वृ नू पा य ॥ न म रु प न सा म ॥ बु ध्वा स वा स नं
ज्ञा नं ॥ प्र सा दा सि द्धि या गि नां ॥ चि लं म ग न वृ न्यं तु मा या ज्ञा न नि
ना म यि ॥ या गि नां प्र रा व न प्र सा दा सि द्धि या गि नां ॥ य थ न त्वं च
म हृ ति र रा व त य थ न थं ॥ कु ला चा र्या स नं कृ त्वा ॥ स्वा चा त्रं प्र
व दा म्य हं ॥ पि ना म व्या प का द ॥ हा मा ता ल कि व रा न न ॥ स्कं द
ग ता तु म कृ त्वा ॥ र गि न्या या गि न लः ॥ कु ला चा लि च म हा र्या ॥

धृतिर्मम कामदासदा ॥ आशुह्रीं न च रम्यं च क्रमादव
गुलरुमा। प्रावत्रं यागवसुं च ॥ ॐ न्दी यागसमन्वीता ॥ विशाचे
वे फुवाल स्त्रीमनुं सकाहं रूपं ली। कुलकुलु लनीपि लुजातिम
का कामरूपीनी ॥ वल्लुचेव खवल्है। पादं च हिवसा हानं।
निश्चनं सुरुम स्वामिं, निर्विकल्पं च मातुत्रं ॥ या गम्या सस
कन्याकं, लात्रवः पशुजं न वः। मनामप्रवत्रं मित्रं, बुद्धिं च
कामरूपिणी ॥ अहंकात्रपत्र (व्येव, विह्वान दिव्यचक्रपी। प

गी गुरुकुल साग्रं आदि व्याघ्रममसकति ॥ मुमुनित्रं जनं चैव
देवं ममनसं हकं। तारुहर्षते थापुष्यं, पूजामकुरुन दिनी ॥
अतव्याचमहाधाम, मविद्धि न्नामहानदी। संभ्राचतलनी प्रा
कं, प्राप्तायामाकमालिक ॥ दीपकं च पत्रं क्षाति धृतिर्मम एव
कात्रली। स्नानं च विनुचिरुति संभ्राकमजपाकत्रं ॥ प्रवर्तिग
महानादं गम्यनुषी ७ ला कला। पुष्यं च उन्मतीह वं रूपं

वविषया न्वितं ॥ नेवशं निजचात्मानं ॥ मायाती तंच तर्पणी ।
महाकालं महाद्यक्षं सात्यगुर्वलु मदिनी ॥ ध्यानं मनिमीनं
तत्त्वं ॥ धमत्रला ध्वयवर्जितं । समचिह्नं च निबुद्धि ॥ मासनं ॥ वा
म्वत्रेष्ठ्यत्रं ॥ पुनकं च महानय ॥ कर्णीदव सदा शिव । पशुहा
वात्सगूरात्मा ॥ अर्थविधावत्रनवा ॥ अहंकात्रवत्ता इष्टं सु
प्रयागापुष्पं पति । स्यातिनत्रकधात्र ॥ यावन्निडाचतुर्द

शीः ॥ तस्माच्चसुमना तुल्या निर्वा नसु ॥ वपाथय ॥ माहासि
द्धिमवाप्नोति दीर्घायुश्च नित्य ॥ गारुवत् । महापातकनश्य
कं हारं रनर्हीसयः ॥ ॐ तिनिर्वात्ता सु ॥ पत्थत् ॥ ॥ कल
सन ॥ पुष्य ॥ नाजासह ॥ वाक् ॥ मनुपत्थत् ॥ ॐ जनमाराग
वतिसिद्धि याति महावल पत्राक महुं रहुं रपुष्याक नक्षपदि
पकुं कुमागुतुचन्दनसिं ॥ नमस्कात कपुष्यवृष्टिं गङ्गास

फऊल्मी जि न पा प ना स य र स र्व वि घ्ना ना स य र ह ग व ति त्र
ग क र डीं डीं सः न ह का म ध्य गी हूं क लु मु र्खी क ल मा तं गी नी
प्र स क्त न र वि शू ल स म य क ना ला ल य ता क डीं डीं हूं इः स प ना
स य र प्र सा दं क नु र म म नु ध्य र्थं स र्व स ख व सी क ल नी स क
हं ड नी र की नि र नि सि क्त म य र ह ग व ति घा त्र अ मा ध हूं इ क
लु य र व ल द म हा ल श्चि दि व्या क रि नी क ग ग ना व लि क ह

इ हूं इ मुं च र डीं र आ हा ह्म न द वी कं क नु र न इ नु त प्र तं पि न
च कृ ष्ण (ॐ) अ प त्त ना व क्त ना क स व ना गाला रु स ह त दा
म ल य क चि त् दि व्या क रि क पा ना न पु वि ध्या क ली त सा ध क
गु हा नां स र्व वे डीं लः ह ले न ह न र स र्व वि डु न घा त य र द
(ॐ) न रु द य र मु ण ल न क द य र स मी पा ण न वं न्ध य र ऊं
अं कृ (ॐ) न क द य र डीं काल नी का ह न सं रु न क ल ति
ध म नि र प्र क्त न र ह डीं स र नृ त्थ र वि श्वं ह य र मा या डीं हा

स
कहमुपप्रिवर्लिनीनांलिवाहूनीविचनेपाइकांयूऊया
मिक्कोऊंअवला॥ननमननपुष्यवहिंदला॥घटना
सिष्यअवतिथी॥नमस्कात्रंदला॥गुनुंसमर्पय॥वि
यापिठिनयंदलास्वस्नानस्कापय॥ॐतिघटनामहा
विधी॥ ॥गुरुगुरुहलंनिन्दपय॥तनागुनुलादया
गुसमानीयते॥दालस॥त्रिसखवाचांकानय॥देह

निदकुला॥ ॥तनागुनुलानामाकुरै॥नित्यतइवीपुष्यं
धला॥गुनुलावाळंचनामाकुलखुंदूंसीपुष्यंपाइकां
॥नामाकुर॥पातनागुनुपननामंदला॥निर्मात्सास्यां
गप्रतिपातय॥ ॥नंनित्यदयासमीपमानीय॥सिष्य
हस्तपूजयित्वांनवात्मा॥सिकाठिनतदब॥वतीसी३॥प
उंगराअसं॥सिष्यहस्तपुष्यं॥आकर्मचक्रंलिनसिंदया

न॥ मनु॥ नै ॐ हं हृ श्री नवात्मा मूर्त्यु पुष्प पाद कां॥ ॥ गुरु
 गुरु रुतं॥ मध्या पात गुरु हं चैव दिता पुष्प पञ्चि मा रुत॥ पूर्व पु
 ष्यं पत गुरु हं दक्षिण म॥ गुरु हं रुत ग॥ गुरु न गुरु हं विद्यया॥ अ
 तनय नेम जय वायु अ गुरु हं रुत ग॥ थं लिख्य वाञ्छ पात न॥ अ
 कि हा मं च काल य॥ ॥ ननु पद अवन र्थ य॥ मनु॥ नेत्र
 कुं री तः अमृती सम हा हे न वाय नमः॥ चौ चौ महं का

लि का ये उग्र गु याय अवन र्थ॥ ॥ मनु लादि न् सा स्यं
 गं पुष्प मं रुत॥ ॥ ननी गुरु लं गाय या अष्टा न त्र लं गं
 पित्वा॥ जी ना लिं गार्च कार वाय कं अथ वा ला रु क ल्य॥ मा स
 न रुत॥ ऊहा पवी नं त्या दि॥ जी ना विद्य॥ ॥ मनु प्र दानं
 ॥ सूर्य॥ विष्णु॥ अघा न॥ मृ लूं रु य॥ गाय त्रि॥ सं ध्या या
 ॥ पञ्चि म अ दिन॥ नवात्मा गुरु मं रुत॥ अघा न॥ वज्र॥

व निसिं ॥ रुका न ॥ सका न ॥ मूलका न ॥ उग्रचक्र ॥ न
की ॥ कालि ॥ कुलेश्वरी ॥ लिखा ॥ तले द ॥ सुन्दरी ॥ स
र्वदया सर्वग यत्री प्रदानं ॥ अकि संयु न न मकु प्रदानं
॥ पुत्रुष स्य दद क ॥ श्री ली वाम क ॥ ॐ मिमकु
प्रदान विधिः ॥ ॥ गंगा न जम लु ल ॥ सै ह बोला सि सिडा
लां ॥ पाइ कां पूजयामि ॥ त्रियां ॥ त्रि ॥ त्र जम लु लंद लु

प्रनामं कृत्वा लिख्य न ॥ गंगा विख्य दल मुडा सख मकु न
लमर्षी ॥ लिख्य नाकं ॥ कृष्णं त्रिन ॥ उम्मां लिडा नन क
प्राय ॥ ॥ दल ॥ दध्म नन नमः ॥ ॥ याग पद ॥
उम्मां सय न याग प ॥ दाय ॥ ॥ उम्मां लि ॥ नेली कं चका
य ॥ ॥ सिंहा ॥ उहं ॥ हम हाना दसिं हाय ॥ ॥ पा ॥
उम्मां सः ॥ मृता नन ॥ ॥ पाइ कां ॥ नेदी पा क था ॥ ॥

माला ॥ शुद्धीं चक्रमालाय ॥ ॥ उपलि ॥ कंल ॥ कौ हं ॥
गानिजं वृ ॥ उ निय ॥ कापिनि ॥ उ हं ॥ उ लाव्य चागच्छ कापि
नाय ॥ ॥ मुडा ॥ उ हं ॥ संजाय मुडा हं रुद्र ॥ ॥ वृ दं
मनु मोन मुचालय प्रक न नेव कालय ॥ ॥ न नानिर्वीलमनु क
थ ॥ ॥ न त्वसफ धा रु स रूप ॥ वृष्णादिष्टात्री न त्वक ॥ थ ॥ ॥
सत्री त्वस्तन ॥ द वस्तन ॥ अस्तिस्तन ॥ नि र्थस्तन ॥ वृ दं
क्रमन सर्व त्वक ॥ थ ॥ वित्रक पत्रम त्वं मूखादष्टा कुं त्रं ग

कृत् ॥ गुगु ल प ॥ थ ॥ नन्दिन काल नंद वं ॥ नल्लमं नेव
लषितं ॥ न गुगुं साधकं ॥ वृ व ॥ लिंग क्काया न त्रं घ य ॥ नाय
त्रं घ न निमीत्यं ॥ नन्दिन सिवदिष्टातां ॥ वि ॥ ष को लि का चा
र्य ॥ उ नि ह स्ति च द लि कान् ॥ नन्दिन का त्र ली सर्व गुगु ह कि
त्र नाय च ॥ सिवाग्नि गुगु पूजा च ॥ क र्त्तव्यं च सदाय दि ॥ अ
त्यागत प्रपू क्षामि ॥ यथा लकी च ददी च ॥ बाल चा तिन वृ

इकी. यथा. किं द किंच ॥ वाचा न कथ्यते ॥ दक्ष सं गच्छन्
॥ ॥ नूनं न नंदाद. स्तः केः शिख्यवाधयित्वा ॥ कुं न मा
महा हेतुवाच ॥ श्रीदयो वाच ॥ विष्णु रूप शिवन ख. जं ह
जिवस्व नृपिन। शिख्यवाधमिदं क्षमं कथयामि प्रसादन ॥
श्री हेतुव उवाच ॥ वाधमानमिदं क्षमं. दीक्षा कुतुसूत्राच
न। नदियते बुह दिक्षा. वाधहिन न सर्वदा ॥ यदी दीक्षा

कृतुः पुं क्षमं. क्षमं म नष्ट ना निचं। गुतु एकः एव दीक्षा तस्मा
न्वाक् स दीनय ॥ गुतु दव महा देव पूज निया न्ययत्नत।
गुतु शुश्रूषया विद्या. विनुति च न. पेवच ॥ वरास्मान न कर्त्तु
यं. गुतु क्षमं. दुष ली.। दुःष नं गुतु लार्थी च. सर्व इः कृत पु
नल ॥ गुत्रा न. गुल ति ह किनुर्द्ध च न गिती न सं. न धर्यते उपा
नं च न तना क्का दितं छिन्नं ॥ उल्लिखं गुतु उक्ताय. उप वि स प्र वि
सती। दंद कर्ष न दं ह स्त. माया वाक् न कालय ॥ क्का या द व गु

तुल्येव लघनं च कदाचन । अहानत्रं घनं चैव । तुल्यवाक्यनका
ल्यग ॥ नित्यदव तुल्य पूजा । नित्यजापतत एव तु । सर्वं तु तदया
नित्यं । नित्यकल्याण पूजनं ॥ नित्यमवलि व पूजा । नित्यसंध्या
सुत्रार्चनं । नित्यगु तु पितामाता । नमः स्मृतं पुनः पुनः ॥ वर्षं व
र्षं पुनर्कृत्यं । पवित्रा ग्राहनं शुभं । अहिकिन्नेन कर्तव्यं । दाम
नं । अथेव च ॥ अनेव यमं तु क्रिया । ध्यानपानादिसर्वकं । तु
कीयासास्वगा सर्वं । दव तु तु निवदय ॥ पुडा मकुं च हान ॥

स्वतृपं च तथेव च । प्रकास्यं नेव कर्तव्यं । मनुमालाश्च मव
चा ॥ यदी संकीर्यतं पुंसां माया पाश्चमाहिनी । माहितं तं विपतिं
स्यात् । पश्चात्साक न पीथत ॥ कर्तव्यं लह तं लक्ष्मी । प्रह्लाव
दिसुबुद्धं । वद्धं तु बुद्धि प्रह्लाश्च पश्चमाकं सु निश्चितं ॥ अ
कर्तव्यं न कर्तव्यं । प्रा लेकल ग ते नपि । कर्तव्यं अथेव कर्त
व्यं । प्रा लेकल ग ते नपि ॥ ॐ निस स्वा च न सि त्वी । यथा वा
कतथा गुतु । गुतु सर्व निव यम् । स कार्य क्रियतं कुरु ॥ ॐ निस

गुनुसुमिंकुला ॥ ॥ नवनाथदिहिः गुनुदक्षिणादानं ॥ ॥
 पुनः निरुधममुल्लिख्य ॥ संखाहिरिकं ॥ नादनसन्मूलवर्जिता
 नसंखपूजयत् ॥ आवाह ॥ धनु ॥ यानिमुद्रा ॥ व्यापात्र ॥ तीर्थ ॥
 खसगस्यं ॥ संखाहिरिक ॥ संखस्यमनु ॥ नेमां श्रीं मुं ही ख व ॥
 नचलरुउचात्रय ॥ अहिरिकय ॥ मां श्रीं हं रुद्र स्वाहा ॥ कर्म ॥
 हस्ति ॥ काहि ॥ कूलध्वनी ॥ उर्द्ध ॥ ध्वन्यामूलपकुल ॥ अहि
 षक ॥ ॥ चन्द्रमादिसत्तान ॥ नवनाथदिहिः आशिर्वादपुष्प

ददताप्रतिष्ठा ॥ ॥ अथग्रस्तावधि सर्वं श्रीं न गुनुलिष्या
 ध्वजपंकात्रय ॥ ग्रन्थकपश्चात्तारां कालय ॥ प्रसादसमय
 चतुर्लोकं ॥ कागच्छिजस्वच्छानं ॥ जात्रो विधानाकर्मकात्रय ॥
 कलंकादिपूजा ॥ वृत्तिमनुप्रदानदिवसविधिसमाप्तः ॥ ॥

॥ ॥ अथपंचदिन ॥ निरुध ॥ तर्पणादिचतुर्लोकं ॥

॥ अथषष्ठमदिवसपूर्ववत् ॥ ॥ अथसप्तमदिवस ॥
 चतुर्थिकर्मकुर्यात् ॥ स्नानान् ॥ निरुध ॥ लिष्या निरुध ॥ मार्ग

शुद्धि पूजा ॥ ॥ वलिहास्तान ॥ दवयानिख ॥ पुष्प हाजन ॥
लिं गार्चनादिक मूर्तिर्चन सांग पांगाल पूजा ॥ पञ्चजाग ॥
विधि नां जात्रो कर्म काल यथा ॥ ॥ संकिस्नान ॥ नलि विसर्ग
नं ॥ दवयानिख ॥ ॥ कुमालालि पूजा ॥ लिष्य स्वस्तिका
सन स्काप्य ॥ ॥ निभीकनादि तु त वलि दात व्यं दी पत्राह
लक्ष्मा ॥ दप्य ल ॥ ॥ वाक् ॥ कल ॥ हिष क ॥ चन्द्र न सिन्दूर

ल माह नी स लाना वी वस्तु दी पुष्पादि आशिषं दयात् ॥ दव
दक्षिण ॥ स लान माल को विय ॥ ॥ त्रज मंजुल ॥ ॥ चन्द्र म
जुल ॥ ॥ नामा कन मंजुल ॥ लिष्य द्वाय ॥ ॥ सिष्य नन मस्का
त्रया द्वाय ॥ चन्द्र मंजुल नामा कन तं नूरु ल पूरु स म् ॥ गुत्रु उप
दाहनं ॥ स्त्री ॥ उ का म न ह्य लादि ॥ समर्पणी ॥ ॥ गुत्रु
प ह्नी ॥ गुत्रु ॥ वी त्रजन ॥ दक्ष लदि ॥ वस्तु ॥ ॥ यात्रि ॥
लिष्य ॥ कु म्हा समर्पणी ॥ वी त्र घन द्वाय ॥ वस्तु नायं ॥ काय ॥ कन ॥

पूर्वचतु ॥ आनति ॥ पुक्तिहा ॥ सूर्य साक्षि ॥ कुमात्री विसर्जन
॥ चक्रिणीय ॥ दंडा मुद्रा ॥ गुरु निवदन ॥ पूर्ववत् ॥ स्वस्व
मंकुल ॥ ॥ थं लिखीन स्वाय ॥ लिष्य ॥ स्वस्व स्फात्रे ल ॥ ॥
गणेशादि ॥ पिथदर्शन ॥ तत्र नक्तत्रं सह हा सं च ॥ अस्ति
पात्र ॥ मांस पात्र ॥ सर्वर्ष गर्व पात्र स्फात्र व्यं ॥ कांस पात्र दा
नं ॥ तर्प्य ल ॥ ॥ अथ गुरु मुक्तिं ॥ कांस पात्र दयं ॥ गुरु

वेदशास्त्र ॥ नवनाथजनं ॥ अलि वलि ॥ पुत्रि तंदशात् ॥
सर्वर्ष गर्व च ॥ ॥ अथ वृक्ष लोहितीय ॥ अथादि ॥ वानु
ल्लहम गर्व ॥ अलि वलि सहितं कांस पात्र दयं च ॥ दद्यात्
कुन्दमूर्तिः पत्रम कुल गुरुं हेतु वाम नु मूर्तिः ॥ अस्याः
पूजा पुसन्नं इति न ह्यहं घात्र पापं निरुक्ति ॥ आयुः श्रीका
किल श्रीचित्रं गुरु यत्वं कानि दं पुक्तिदं स्या ॥ सर्वलीत्र कदा
न न वाजिदानं ॥ त्रैत्रिपीवी जाली पात्र दानन ॥ असं कुरुत्

उच्यते ॥ अमुकनाम लिख्यते नाधिक नाना त्या त एतन्मर्थ
शानवात्सा गुनुव आचार्याय सहितं च अलिवलि सहितं कां
न पाठुदान गुह्यं महं संप्रदद ॥ ॥ गुनुमुनिं ॥ नमस्तु
नमस्तु नमस्तु नमानमः ॥ नमस्तु त्वं गुनामुर्लिदवद
वाधिपेधन ॥ अ त्वं मुमं ललायादि ॥ पूर्व जन्मदुर्लभं पापं
रुद्रजन्म पुत्र्यकृते । महा इति न नासाय । महासा निकज

गुह्यं सक्तु नदपत्रम एतं । गुनुमूर्लियत नमः ॥ सा स्यांग प्रला
मं ॥ गुनुलापयेत् ॥ इत्येकं प्रविनासनं जयकनं । धर्मीर्थका
मप्रदं । लक्ष्मीवृद्धिकनं त्रिपूः दयकनं सोलस्य माकृप्रदं ॥ न
सेयः प्रददातु पाठुलाहीतं कादम्ब त्रिपू त्रितं । मां सत्त्वाद
समन्वितं गुनुवनं संप्राप्य तस्यो रुलं ॥ यादया गुनुमूर्लिय
हनीयतं स न्यातु पाठुनच ॥ पात्रोस्तु त्रिवात्यर्कदिता च मदि
तां मांसदयं नान्वितं ॥ रुद्रा पूर्व युतं सत्ताकृद्दयं सार्द्धं प्रला

क्षेत्रियात् ॥ अनदान् नरसिंहाश्चरन्तं वै सप्तकुक्कुटान् । शंखच
मलदुग्धं च दधि च मधुपंचकान् ॥ विल्वकं जीज एतंच दाहि
मावर्तं शंखकं । मारती च तथा पद्मं डाल्य रं पारिजातकं । सुगं
धपुष्पकं लेच दुर्घासत तथैव च ॥ धनधान्यादिकांश्चैव व्री
ज्यातीकंच तालकं ॥ सुगन्धपुष्पपंच । आमादंश्चैव मूलका
न् ॥ एतत्सर्वं शुभं शुभे मंगलं प्राप्नुयात् ॥ नरः ॥ अशुभं दृश्य
त्वं

तेष्वप्ये अशुभानि विनिर्दिशेत् ॥ शुष्कवृक्षं च क्षुद्रमंचनदी चो
जलशोषकं । नदी नंगे न जागानि जलसर्वत्र शोषकं तालव
सकमण्डूकं ककुलासं दुर्घुंदलं ॥ सर्पगोटा विचाराश्च
काकमर्कटगृध्रकं मातंगं कालसर्पं च कषायवक्त्रं च त्रि
नं ॥ प्रामादपर्वतान् ह्यग्निं त्वयं पतितमवच ॥ किमीकी
टपटंगश्च दूनध्वानं च दर्शनं हितं हिडं च पुत्रुषं नग्न
मिंसुककलिनीं ॥ महिषं च वृषं च गजं च ह्येव नमवच ॥

स्वयं मृत्यु मृतं दत्वा चितामश्नुवन्निवेद्यैः ॥ अग्निहीनं पि
तृणाद्यन्तरीक्षं सांशुतजमजा । अक्षुहं चरुवदवान् स्वप्नद
त्वात्तथाधमः ॥ तत्सात्सर्वं प्रयत्ननष्टानिकर्षी लिकाल
यथा जपहा मादिकंचे ववीत्रमलापकनच ॥ गुणुत्तमचपु
नष्टान्धषाढात्तान्धदिपूर्वकं । नतः क्षान्तिरुवन्नुनं अक्षु
हं चरुहं चरु ॥ ॥ ॥ ॥ निस्वप्नसुप्तविधिः ॥ ॥ नि

श्रीमत्पद्मिनीमन्त्रसंक्षेपमहासायाञ्जिकृत्तिकाहृत्त्रिका
यविषिष्टनिर्वाणसर्वाधिकारषाज्जलहिषकदीक्षासमाप्तं
॥ ॥

कोलिया
दीनका
कलसप
तमे
काळ

कलहा० कुंम्भ० नून्यघट० तिला० लीख० श्रीकर्मचक्र०
अष्टपत्र० त्रिकोत० अष्टपत्र० अष्टपत्र० अष्टपत्र० वलि३० अष्टपत्र०
द्रुक्कंतिधुमु० पद्माल० वलि० वर२० वलिति० वलि० अर्धपात्र०
वलि० चाक० मोहनि० पंचवलि० नामाकृतवलि०
लिंगार्चन० वलि० अष्टपत्र० त्रिकोतचाक० श्रीपात्रवलि०
वलि० अर्धपात्र० चतुसलुल० वलि० नेत्रपत्र इका० पुका अक्षत हादलु
धुं— कुश

अष्टपत्र० उरुनलश्रीऊरु० पञ्चिम
अष्टपत्र० वलिपा३ कर्मचक्र
वीलकलहा० अर्धपात्र वलिपा३
नजमलुल० लीख० अर्धा
दलमुडा१०० पंचवलि०
वलि३२० धनवलि
अर्धपात्र

कर्मचक्र
वलिपा३
अर्धपात्र
लीख० अर्धा
पंचवलि
धनवलि

१ दादलानं लिख चक्रं ॥ वल्लुकि न हनीयकं । दध्न वरुं यच्च
कं ॥ अ० उ० उ० न संयुतं ॥ न वेकपं के क सिद्धीः साध प
दुल्लयुग्म कसि सिद्धि त्रिंश किनु डच ॥ च रुष्मा द्वाद (६) ति
पु ॥ नमनुं नादि मध्या नं नम (७) पी ० संयुतं । कवलं यदिल
त्यन नदायं स न पू जि नं ॥ सिद्ध सीद्ध तिका ले न साध न सिध्
न न वा । स सिद्धि न कृत्वा द वी अ लि मूल विन ष्य ति ॥ य व

२ वल्लु पूर्व स्थाः पी ० संज्ञा विज्ञानि ही ॥ नयुनुं नादि मध्या
नं संयागा क न वरुं नं । कवलं यदिल त्यन नदायं स न पू
जि नं ॥ स्वाचक्रं ॥ काथक ॥ नुकं ति ॥ यानि मा
वगाश ॥ कोनि मा ॥ तखु निर्थ ॥ कहगा ॥ लु ति
पासकी ॥ नुमधि ॥ मल्ल न न ति ॥ लं गु म ॥
द व ति न खु ॥ च न न खु ॥

विनिष्कृत्य मुपाशा य... मा मुद्र न तु संकटात् ॥ न दीया
 हं समनाथ... त्वमेव नलीमम ॥ न स्नात्वं कृपया नाथ
 दीक्षादा नक्षद हिम दीय न ह्यन सहा वं... केन ते च
 मलत्रय ॥ न नदी क्षाप्रदानं द हिम कृपया मम
 ॥ पाषाहं मि त्यादि ॥ ॐ तु प्राप नु वे तु लम संकात्रय
 ॥ पुनर्मी नु लंद कुरु किन गृही त्या वाम रु किन तु

त्रुवपुष्पीदत्ता ॥ लिपः प (०) न् ॥ कायबुद्धिकनल
मस्तु ॥ ॥ गुरुत्माप (०) न् ॥ क्षत्रलेमस्तु ॥ ॥ वाक्बुद्धि
कनलमस्तु ॥ ॥ क्षत्रलेमस्तु ॥ ॥ विलबुद्धिकनलमस्तु
॥ ॥ क्षत्रलेमस्तु ॥ पुनः कायवाक्विलसर्वसनास्व
मवक्षत्रलमस्तु ॥ ॥ क्षत्रलेमस्तु ॥ ॥ निग्रिधपुष्पीप्रक्षिप
प्रक्षमकात्रयेत् ॥ स्वगतिस्वरुतामित्यादि ॥ ॥ अथर्ष

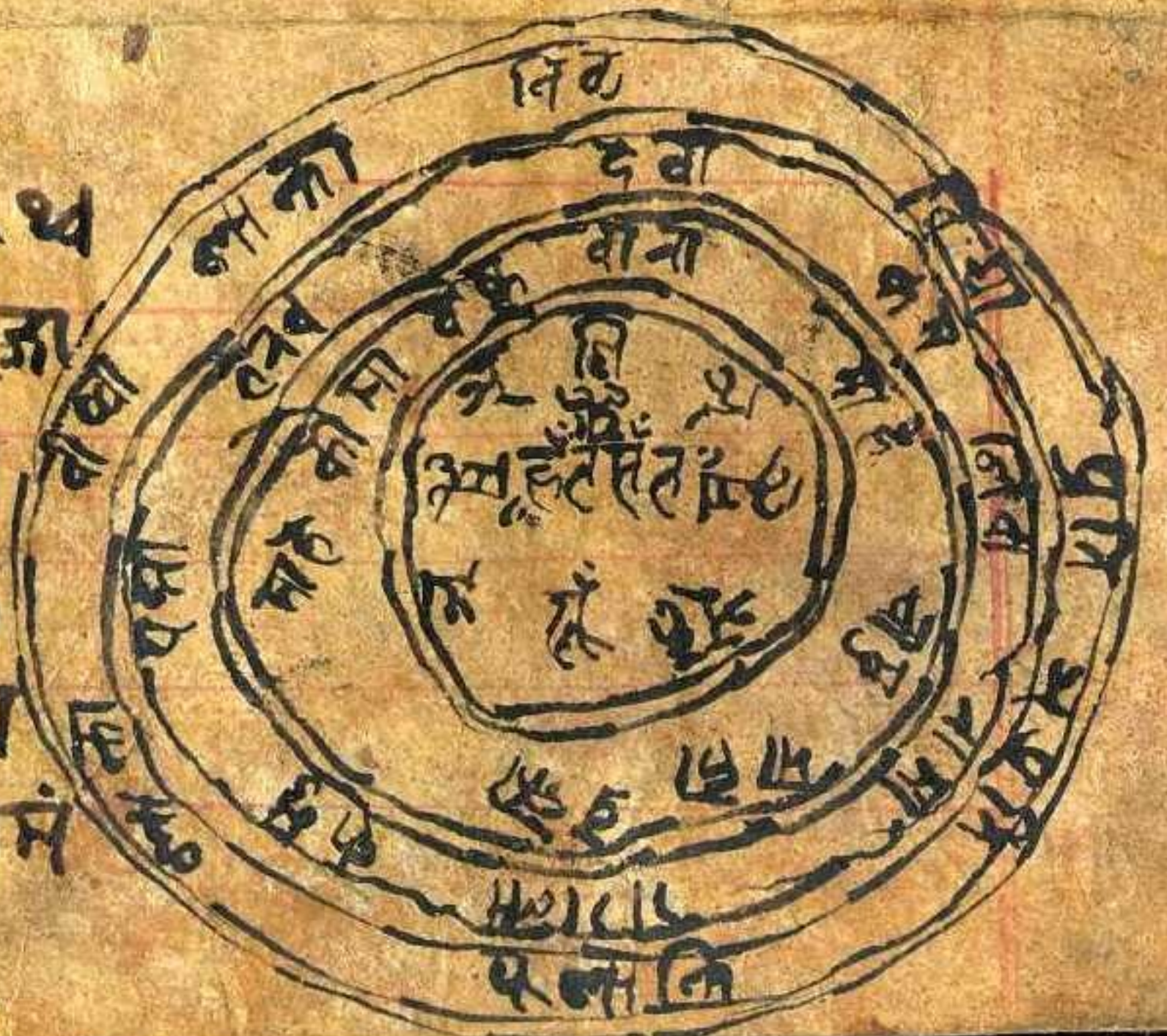
इसवलिदाने ॥ त्रिदव ॥ वृक्षात्वादि ॥ रुकात्रसकात्ररुद
नत्वाकसहावलि ॥ धूप दीप नेवय ॥ मन्त्रलसलेखला
यक ॥ त्रैकीं सोरुक्तनउदकधनयामन्त्रलं कृत्वा ॥ संम्व
लीत्यादि ॥ त्रैमन्त्रलायनमस्तु सर्वतत्वाधिपायव ॥ त्रुर्बुव
सखनूपाय विष्णु नूपाय नमः ॥ क्रियालापनकर्तव्यमम
कार्यं वसिष्ठय ॥ दं न्यती गुरुवदनप्रसन्नोस्तु सदा मम ॥

अग्रगन्थादि ॥ मलुलनमस्कानंकृत्वा ॥ ॥ मलुल ॥ गु
त्रु ॥ विलुज्जन ॥ दक्षिण ॥ ॥ मलुलविसर्जने ॥ मलुल
यस्युषादिकं स्मृतं न तसर्वं गुत्रुवनिवदयत् ॥ ॥ वि
षयपथत् ॥ ॥ हृदि नक्षत्रक्षुद्रं सप्रसन्ननचनसागकी
हिनाश्चरुं नाथदिक्कादानंचदहिम ॥ ॥ गुत्रुलप ॥ ॥ ॥
ददामि मरुं नैपुत्रसुप्रसन्ननचनसागुत्रुचनलमासाय

ॐ हव नस्यप्रसादत ॥ नवमस्तु गृहीत्वा तु मलुलंचविस
र्जयत् ॥ ॐ निविसर्जने ॥ ॥ संहात्रक्रमनेवमध्यस
र्वधत्वा ॥ अनामिकागुह्यागन ॥ आत्मविद्याविव
प्रसन्नास्तु ॥ ॥ मध्यसिन्धुलिलकं कात्रयत् ॥ सर्वान्
पुष्यान् विनष्टप्रलमं ॥ ॥ निमील्यं ॐ हवने क्षिपत्
॥ रुक्मप्रकाश्य ॥ ॥ कुं नमानिमील्यर्वक्ष्यतमः ॥ ॥ वि

[illegible]

॥ ॥ पिथसमं लुलट पूजा ॥ थ
नइ ॥ थसनवनाथमंलुलट पूजा
थनइमंलुलट पूजा ॥ ॥
थनंदुमंलुलट चारुवक्कादि
पूजा ॥ ॥ दथसवतिसिषठंग
पूजा ॥ हुकात्रसकात्रकूटनयेनुमं



बुलपुजा ॥ ॥ म ॥ ॥ सूर्य मंलुल ॥ चन्द्र मंलु ॥ वक्रिमं ॥ अ
खलु ॥ गुरु मं ॥ अघान ॥ वज्र ॥ वक्रिसि ॥ रुकान ॥ सकान ॥ मून
का ॥ उग्रवल् ॥ सिद्धिलक्ष्मी ॥ कालि ॥ कुरुक्षेत्री ॥ त्रिपुर ॥ धर्म
यां त्रिशा ॥ लि ॥ वलि ॥ स्वाकुमाहावलि ॥ आवाहनादिचन्द्र
नादि ऊहापवीनपुष्पावाकाद नरु लनामूल ॥ नैदूल ॥ ६
पदीप ॥ नैवय ॥ अलि ॥ वलि ॥ सहिर्न सापस्कन लेसर्वस

वर्षे पूजितासकुर्वन्त्यादिसुप्रीनारवकु ॥ ॥ स्फाग्रं ॥ अख
लुमलुला ॥ श्रीसंवर्ली ॥ वक्राली ॥ म ॥ अत्रिशा ॥ स्यामानका
॥ मार्क ॥ लुया ॥ यादवी ॥ उहृला ॥ यासानकागति ॥ ६८ ॥
कं ॥ काकाहा ॥ नुनुहोव ॥ अग्रगन्धादि ॥ अर्घदान ॥ ॥
स्फाग्र ॥ अखलुमलुल ॥ श्रीसम्बली ॥ संसात्रहय ॥ पूर्वव
त्स्फाग्रं ॥ ॥ पुनर्मीलुलंदकि लरुक्तनरहीखा ॥ वा

महर्षिनगुनुवपुष्येदत्वा ॥ पूर्ववत्वाक् ॥ ॥ अथ द
दू सवलिदिय ॥ ॥ मलुलविसर्जनं ॥ मलुलयपुष्यादि
कंस्तिनं तत्सर्वं गुनुवदिवदयत् ॥ वाक् ॥ निषीपेत् ॥
॥ दीक्षादानाय दवणी ॥ उत्कृतं कर्म श्रद्धया । तत्सर्वं सां ग
नामकु ॥ त्वत्प्रसादात्मरुष्यत्री ॥ महामाय ऊ गन्मातः क
नुलावनुलांलय । कृम्यां न ऊ गस्थत्री ॥ न्युनाधिकं स्व

दर्वन ॥ अथ गन्मादि ॥ पूर्ववत् ॥ ॥ निदवमं लुलवि
धिः ॥ ॥ अथ पुष्यलाजनं ॥ मालै लुपुजा ॥ दात्रपुजा ॥
आमकुल ॥ नगा ॥ हृदवनासिककर्मा चर्चनी ॥ कात्रयत् ॥
न्यासादि ॥ ऊलपात्र ॥ अर्घपात्रपुजा ॥ हृत्तुद्रि ॥ आत्म
पुजा ॥ मालिनिपेत् ॥ पंचवलिंदयात् ॥ ॥ धनं ॥ नर्ष
ल ॥ ॥ मुखद्रि ॥ नाम्नुलादिहृत्तुली ॥ ॥ नगा कृष्णं चर्चनी ॥

कसकन० सिंधुमुद॥ नताकुलार्चली॥ ॥ नताश्रीपात्र
पूजनं॥ ॥ नतानत्रपटपूजनं॥ नत्रपटप्रमानं॥
व्यात्रैगु ४ इकया॥ वतु संस्कारं॥ नपद्मा स्ताय ३॥ कुं
रुं सः अमृती समहा तेन वायपा ३॥ त्रि ३॥ षउद्र ६॥ न
कौंकीं मरुता त्रिकायेन ग्रयाय वो षट्॥ कुं रुं सः रुद
याय नमः॥ षउद्र॥ नत्रमकुलत्रहा रुतं रूपत्॥ वलि

त्रावाद्य॥ मुद्रा॥ ध्वन॥ कृतिनत्रपटपूजाविधिः॥
॥ अथ दनका हपूजा॥ दनका हप्रमानं॥ हासिका
हत्रं १२ पुरं गुरु त्रिका हत्रं १२ पुरं १ कृष्णसुदधनं ॥
॥ सिंहा स्ताय ३॥ नुदत्ता स्ताये ध्वन॥ दलिनीचमहा
धात्रा॥ प्रतासनीसुहारिना॥ सबजीवनाडग्रनृपा॥ त्रिन
द्रा॥ नृकवासनि॥ ॥ नृवंध्या स्ताय ३ इवीत्वादका हपू

रूपिनी । कलकपालरुक्माचसर्वपापप्रनाशनं ॥ ॥
नेऊकींदलिन्यायेही ३ ॥ त्रि ३ ॥ नेहृदयाये ३ ॥ षड्मू
॥ वलि ॥ नेलंचनकायवलि गुरु रखाहा ॥ नेवांवदूकना
भयवलि गुरु रखाहा ॥ ॥ पद्मास्त्राय ३ ॥ त्रुघात्राकुल
पूजनं ॥ ॥ धनं त्रुष्टीकृतं ॥ वलि ॥ ॥ धनुमुद्रा ॥ जाप ॥ श्री
स्वाहा ॥ ॥ निदककाष्टपूजाविधिः ॥ ॥ गंगात्रुक्तपूज

नं ॥ सनिसुगय ॥ पद्मास्त्राय ३ ॥ त्रुघात्राकुल ॥ त्रि ३ ॥ श्री
हृदयाय २ ॥ षड्मू ॥ वलि ॥ ॥ धनुमुद्रा ॥ ॥ नित्रुक्तपू
जा ॥ ॥ त्रुधधूपपूजनं ॥ नेपद्मास्त्राय ३ ॥ त्रुघात्राकुल ॥
त्रि ३ ॥ पूजनं ॥ ॥ धनं ॥ ॥ धनुमुद्रा ॥ ॥ निधूपपूजा
॥ ॥ गंगालिलापूजा ॥ पंचगव्यनस्त्रापयत् ॥ त्रिनद्र
॥ नकुवकुलकाय ॥ नकुपद्मास्त्राय ३ ॥ वलिसि मूल ३ ॥

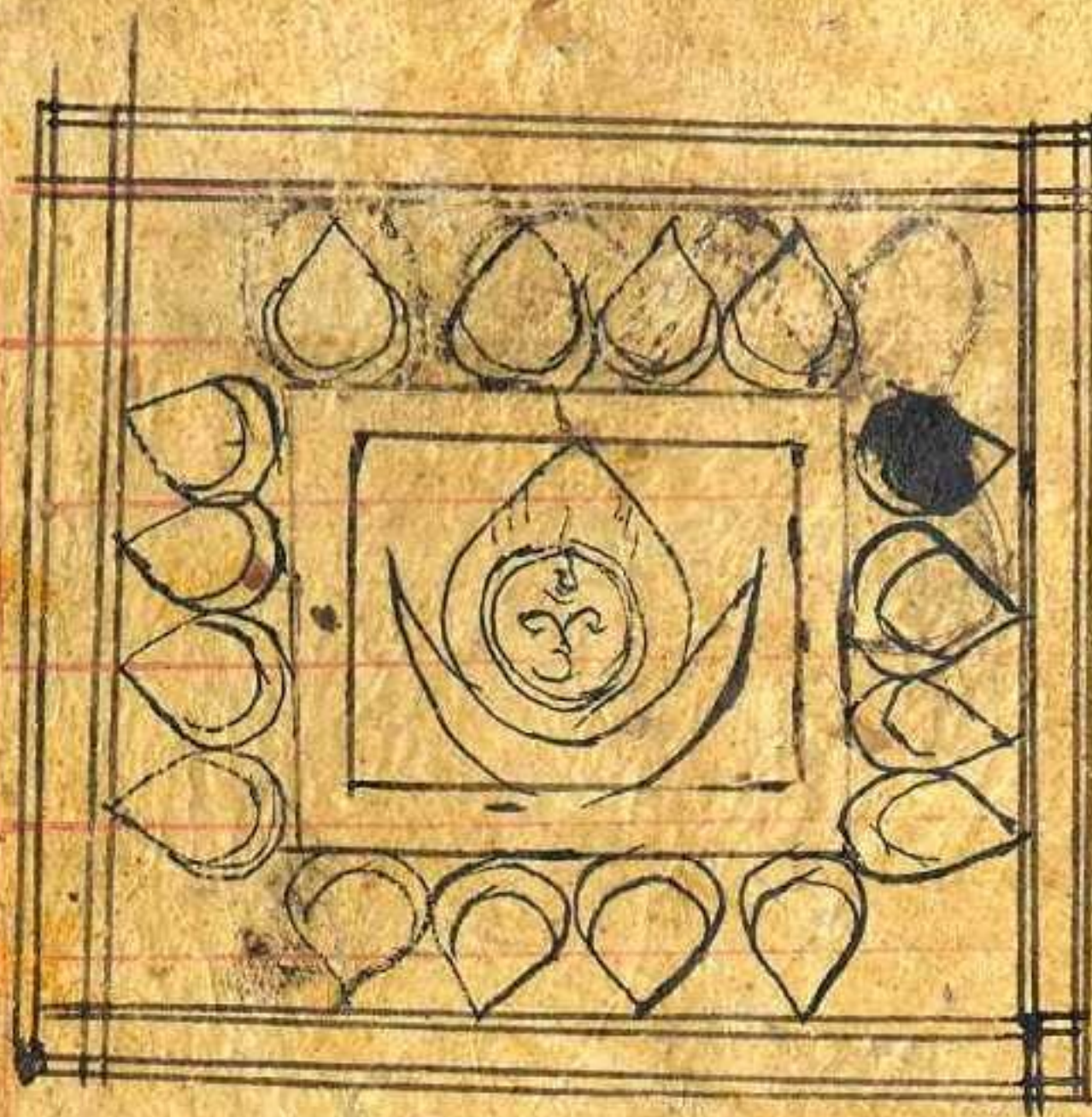
[illegible]

न गी लीख पूजा ॥ पक्ष मृग स्नानं ॥ त्रयं च प्र ना स्नाय ॥ ध्वा
नं ॥ नेकु द्विनी संख नूपाच न का मो नु ह मा सि नी । उका
स्यं ला च न छि ली नी लं जि मू उ सं ति हं ॥ च का र्थं ह ल पा
ग्रं च सिंह च म्मी ल नि यु का । मु ल्म र्थी उ ग्र ह न ल्म सर्व
गा पिं प्र क णि नी ॥ न ग्र नू पं स मु म नं कु द्वि तु ल्या ऋ नू
प कं । पूर्व ज न्म क नं पा पं ति ह ख नि प्र दा य कं ॥ ॥

त्रयं श्रीं श्रीं श्रीं लीख व ज्ञान ज्ञा म लि र श्रीं श्रीं श्रीं हं रु ह स्वा
हा ॥ त्रि ३ ॥ ष उ ऋ उ ॥ व ति सि ष उ ऋ ॥ ॥ पूर्व दि ष्ण
क्ष म्म कं पू जा ॥ ने जीं अ धा र्था ये ३ ॥ ने जीं प न म धा र्था ये ॥
ने जीं धा त्रा मु र्थे ॥ ने जीं धा त्र नू पा ये ॥ ने जीं ही मा ये ॥ ने
जीं ही ष ह्थे ॥ ने जीं प व ना ये ॥ ने जीं व च ना ये ॥ ने जीं पि व ना
ये ॥ ने जीं अ धा ना मु ल ॥ व ति ॥ ध नु ॥ या नि ली ख

चक्र३॥ वृज्जीं चक्र३॥ श्री चक्र३॥ कुं चक्र३॥ कौं चक्र३॥ उ
ज्ज्जीं श्री चक्र३॥ घट ग्रामय २ हं ३ रु ८ ० ० ॥ कुं न ग्र हो
वृज्जीं त्रीयन न क ट नीय स्वा हा ॥ वलि ॥ खच त्री मु डा ॥ दा
व वृ व न सि व लि ॥ व नी सी म कु ल व लि वि य ॥ ॐ नि ॐ
न्य घट पू जा ॥ ॥ त्र य व नु म लु ल पू जा ॥ कं स थ ल स
श्री ख व न ल प न ॥ ख न निल न हा य ॥ कुं का न रा य ॥ पू ज

नं ॥ हं सा स्ता य ३ ॥ ध्यानं ॥ क र्णू त स्फु टि का व दा न म नि ॐ
पू र्ण नु वि च्छा न नं ॥ मु का हा न वि रु धि त न व पू षा नि र्मू
ल यं कं त मः ॥ रु स्ता स्तां कु मु दं व न शू द ध कं नी ला ल को ल
सि तं स्व स्तां कु मु मृ (म दि ता व्र य गु लीं सा मं सु धा द्विं रु ३ ॥
ध्यानं ॥ नृं नृं हंः प्रति प दा न न्दा य न मः ॥ नृं त्रा दि ती या न
न्दा य न मः ॥ नृं ॐ ह ती या न न्दा य न मः ॥ नृं ॐ च कु र्थि न न्दा य न मः ॥



ॐ उँ पंचमि न न्दाय नमः ॥ ॐ उँ ष
 हि न न्दाय नमः ॥ ॐ अँ सुफमी न न्दा
 य नमः ॥ ॐ अँ जू ह मी न न्दाय न
 मः ॥ ॐ ऊँ द सु मी न न्दाय नमः ॥
 ॐ ङँ त व मि न न्दाय नमः ॥ ॐ ञँ
 का द णी न न्दाय नमः ॥ ॐ टा द णी

[illegible]

पूजनं ॥ नामाक्षरपूजा ॥ त्रैलोक्यवागीश्वरानन्ददेवपाद
की ॥ आंगगलानन्ददेवपादकी ॥ ॐ मुडानन्ददेवपाद
की ॥ ॐ लूकानन्ददेवपादकी ॥ उडस्रानन्ददेवपा
दकी ॥ उडस्रानन्ददेवपादकी ॥ अंधापानन्ददेवपा
दकी ॥ अंधापानन्ददेवपादकी ॥ ॐ छिवानन्ददेव
पादकी ॥ ॐ कृष्णानन्ददेवपादकी ॥ नृमहोदयानन्ददेवपादकी

[illegible]

स्वंचर्या नन्ददवपाइकी॥ गं वगानन्ददवपाइकी॥
घं त्वंगानन्ददव३॥ ङं कषावानन्ददव३॥ चं सूर्या नन्द
दवपाइकी॥ छं गगानन्ददवपाइकी॥ जं विजयानन्दद
व३॥ झं अजितानन्ददव३॥ ञं प्रहानन्ददव३॥ टं वीर्या न
न्ददव३॥ ठं सूर्या नन्ददव३॥ डं कृष्णानन्ददव३॥ ढं पा
दानन्ददव३॥ णं कृष्टिना नन्ददव३॥ तं तत्त्वानन्ददव

पाइकी॥ थं हेनवानन्ददव३॥ दं देवानन्ददव३॥ धं सि
द्धानन्ददव३॥ नं तत्त्वानन्ददव३॥ पं पद्मानन्ददव३
॥ रुं र्गगानन्ददव३॥ वं हयानन्ददव३॥ एं वीर्य नन्दद
व३॥ मं मगानन्ददव३॥ यं कामानन्ददव३॥ त्रं त्रका
नन्ददव३॥ लं सूर्या नन्ददव३॥ व्रं ब्रुहानन्ददव
३॥ षं त्रामानन्ददव३॥ षं शुक्लानन्ददव३॥ सं

चन्द्राय ३॥ ॥ ॐ उ
 र्द्वचन्द्राय ३॥ ॐ उ ॥ दाल
 ॥ अग्निर्नाम दिपू जर्न
 ॥ ॥ अथ हनुकादिपू
 जर्न ॥ एषादि ॥ नत्प
 ष्मचोत्राणि सिद्धापू



योगपदा

जा ॥ हेतुवातनन्ददव ३॥ नामानन्ददव ॥ कित्रलानन्दद
 व ॥ ॥ वीत्रानन्ददव ॥ ॥ कृष्णदानन्ददव ॥ कनकानन्द
 दव ॥ ध्रुववक्षानन्ददव ॥ गजवक्षानन्ददव ॥ पद्मानन्द
 दव ॥ त्रिलोचनन्ददव ॥ लयानन्ददव ॥ वलानन्ददव ॥ द
 वानन्ददव ॥ नृकानन्ददव ॥ शुक्लानन्ददव ॥ वीत्रानन्द
 दव ॥ मत्स्यानन्ददव ॥ कमलानन्ददव ॥ मलिकानन्द

द व ॥ किं ली कानन्द द व ॥ नी वानन्द द व ॥ त्रि पूत्रानन्द द व
॥ खच लानन्द द व ॥ च लू कानन्द द व ॥ ग र्ही नन्द द व ॥ वि
म लानन्द द व ॥ सिं हानन्द द व ॥ बाघानन्द द व ॥ जयान
न्द द व ॥ नल्लानन्द द व ॥ वामानन्द द व ॥ नामानन्द द व
॥ सहजानन्द द व ॥ उत्तमानन्द द व ॥ कृष्णानन्द द व ॥
खं म्हा दि त्या नन्द द व ॥ हे लू णानन्द द व ॥ सुत्रानन्द द

व ॥ सूर्यानन्द द व ॥ जामत्रानन्द द व ॥ योगानन्द द व ॥
चिगानन्द द व ॥ खकू लानन्द द व ॥ लीगानन्द द व ॥ वीजा
नन्द द व ॥ गुरुनन्द द व ॥ उमानन्द द व ॥ पद्यानन्द द
व ॥ अजिगानन्द द व ॥ किं णदानन्द द व ॥ पुष्पानन्द द
व ॥ के लवानन्द द व ॥ उत्तमानन्द द व ॥ गुरु श्रानन्द
द व ॥ कूलानन्द द व ॥ त्रु मृगानन्द द व ॥ सिद्धानन्द

देव ॥ गुफानन्ददेव ॥ सिनीपानन्ददेव ॥ खजानन्ददेव
॥ क्षामानन्ददेव ॥ व्यकानन्ददेव ॥ सहजानन्ददेव ॥
गगलानन्ददेव ॥ कुसुदानन्ददेव ॥ निवानन्ददेव ॥ सूर्या
नन्ददेव ॥ तीव्रानन्ददेव ॥ खचलानन्ददेव ॥ गर्हसूका
नन्ददेव ॥ सिंहानन्ददेव ॥ विजयानन्ददेव ॥ मित्रानन्द
देव ॥ शुभानन्ददेव ॥ खजानन्ददेव ॥ मुदानन्ददेव

व ॥ त्रुमनानन्ददेव ॥ सीतानन्ददेव ॥ प्रहलानन्ददेव
॥ प्रियानन्ददेव ॥ रुदयानन्ददेव ॥ वृक्षानन्ददेव ॥
नार्यानन्ददेव ॥ रुमिलानन्ददेव ॥ नुसह जोनासि सि
दाय ३ ॥ लीचीलननादल मुद्रा पूजन ॥ नुज रुह सजा
झ ॥ मुद्राय पाइ की ॥ म ॥ मुद्रा ॥ नेमू सिद्धासन रु
फां फि नाय ३ ॥ पूर्व ॥ ॥ नुसू सवधू नयाग पहाय ३ ॥

दक्षिण ॥ नृसी कंठु काय ३ ॥ मृ निनेअख ॥ ॥ नृमु
 महादादसिंहा हाय ३ ॥ सिंहाप **म** ॥ ॥ नृकु
 रं नृमनासनपात्राय ३ ॥ पात्रवायु ॥ नृंजी पाइका
 सी ३ ॥ काथपात्रनेअख ॥ ॥ नृध्यां नृकमालाय ३ ॥ जप
 मालाडहन ॥ ॥ नृक्षो **नृ** नृ नित्रंज निय ३ ॥ नृप
 नि कंठु कंठु **नृ** न ॥ ॥ नृनी काषिका

य ३ ॥ **नृ** न ॥ खखवलि ॥ **नृ** निदलमुडाचोत्रासि
 सिद्धा **नृ** नृमंलपूजा ॥ ॥ नृगविलनिर्घालमनमृ
 र्ति कृणपूजा ॥ न्यास ॥ नृनृमयदृष्ट ॥ **नृ** खादिमक
 नकलनृगंन्यास ॥ **नृ** लपात्र ॥ नृधपात्र ॥ पूजा ॥ **नृ**
 नृदि ॥ **नृ** लपूजा ॥ **नृ** वाहन ॥ **नृ** लपयवनानक **नृ** का
 न ॥ न नृ विग्रह ॥ सर्वहन हिनमानः नृहपनमंयत्री

एडः अरुणाच दीतीयका ॥ दक्षिः लमांसखं जा निः वामप
 लः कुलीषली । मुक्त त्रंदक्षिः लरुक्त्तः वामपलं सूचचर्चनी
 । दक्षिः लनिर्घिनंः लुजुं वामपलं चखटकं ॥ दक्षिः लच
 लिनावलीः वामपघल्लुः कुसूखनां । दक्षिः लवाला मुष्टिकु
 वामचापं सूवजसं ॥ दक्षिः चजमत्रुकंः लुष्टं वामपल्लुः चचा
 कली । दक्षिः लचापत्रं पासंः वासदलुं मदावली ॥ दक्षिः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वकुदीप्यकं वासकहात्रिका लुहा। निर्घनाचेवनिन्त
का. त्यागसुत्राचमालिनी॥ निर्दयाकामसंयुक्तागीतनृ
त्यनथाप्रिया। वहनासीचगुराच. कत्रीप्रिगीकनस्तथा।
निद्रामाहयुताहड. गुलानस्याप्रकिलीताः॥ ग्रसयन्त्यसु
त्रान्सर्वान्दवानान्महयंकत्री। मलयसंवष्टयित्वागु.
रुत्कोत्रावरुंहीषला॥ नांदत्वाविस्तृताः सर्वदवासुन

मनात्रमा। अहंतंदवदवजाकन्यारुघनुहीषली॥ मलय
संवष्टयित्वागुनदीनूपाविसर्पिली॥ ॐ निध्यान॥ ॥
त्रयं नमः श्री विनम्रहिकूलकृष्णहृदयिकाय३॥
षडंगं श्री ॥ वलि. अद्यानाकुल॥ ॥ नृंजीं श्रीं श्रीं
बोनाय श्रीं श्रीं सिद्धाय३॥ पंचत्रयनय॥ पूजा॥ श्रीं श्रीं
गुंगगलत्रलाय३॥ श्रीं श्रीं सुखं नमस्तुलाय३॥ श्रीं श्रीं

नूंनागत्रत्ताय ३॥ ॥ ॐ ॐ १६ कं रवं ३५ माह काये ३
॥ वलि ॥ नृज सुवुं की चतुःषष्टि तत्त्वा यम हाहा किं श्री
पा ३॥ निर्वाण ॥ ॐ स्वा कम हा वलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ ने वय
॥ रुप ॥ हं हं हं हं हं ॥ धा १० ॥ श्री ॥ घल्ल वायं ॥ या सु
त्रा सा उ मा द वी ॥ या मय सा म ह वयन ॥ या वृक्ष वल्ल सा ह व व
वृक्ष या ग न्ध सज नादन ॥ ॐ का यां मन्त्र ॥ द वी जल मन्त्र

तु हे त्र व रु त गं ग म स्रा काना घ न ह्य स फ सा ग रा ॥ आ का
ल घट मन्त्र मु त्र र ह्य धी वि रु व न् ॥ ड व नृ प कि ता रु
म न ज हं व दू धा स नं ॥ मा न ग्रा हा ल दे व हा हा ना ई ग ल
ल य का ॥ रु गृ हा वा रु व द वी ॥ न वं व्याप्य घट कि न ॥ नि म्म
द स्य कु ना हा नं वि ह्म नं वा क थं रु व न् ॥ ह्म न वि ह्म न संप
न्ना म द नु व ॐ नि ह्म ता ॥ ॐ ग न्ध दि ॥ म हा या नि मु डा ॥

ॐ निवीत्र मूर्तिं कृत्वा पूजाविधौ ॥ ॥ अथ धारा न्यासादि
संलग्ना पाणिन कर्मोच्चैर्नी पूजयित्वा ॥ धूप ॥ दीप ॥ माहनी
॥ नेत्रयादि ॥ जाप ॥ स्तोत्रं कात्रयत् ॥ ॥ ॐ निदवत्रधिवा
सनविधिः ॥ ॥ अथ लिष्यत्रधिवासनं कात्रयत् ॥ नगी
लिष्यत्रस्वस्तिकीः नृमर्कनादि दीपलाहलकी कृत्वा ॥ पर्याधा
त्रयापप्रगर्हितस्वस्तिकनिधाय प्रथममनुजे ॥ पुनर्नमः ॥ ॥

यत् ॥ पुनर्पूर्वादिमुखं कृत्वा ॥ लिख्यपश्चिमादिमुखं कृ
त्वा ॥ पुनः नृमर्कनादि दीपलाहलकी कृत्वा ॥ अथानासु
ल ॥ त्रिधा ॥ हस्तवलिदातव्यं ॥ ऊँः अस्त्राय रुद्र ॥ त्रिधा ॥ दी
पलाहलका ॥ ऊँः प्रकाशरुद्रास्त्रास्त्राहा ॥ त्रिधा ॥
सुप्रकाश ॥ स्वस्तिकार्क ॥ मन्त्ररुद्र ॥ मन्त्रावा ॥ सन्मनन ॥
स्वाय ॥ अहिसृष ॥ वाक् ॥ चेत ॥ सिन्धु ॥ सन्मन ॥ स्वानविय ॥

॥ निष्पत्तुं लक्षणधयत् ॥ वनि सी मुलन च तु सी स्का
न ॥ मूलन निती कली ॥ अकुलनाथ लीजन ॥ कवचनत्र
व तुल्ल ॥ मूलगमय ग्रीन प्राकली ॥ ॥ ह्रीं स्वाम्यु ॥ अर्घ
पात्रगीर्थ ॥ अकृत ॥ धूप ॥ कुल ॥ जप पंत या तुलि ॥ वनि
सि ॥ षडैंगल ॥ ॥ नेऊन भारगव नी हस्त मलाये झाँझी
पा ॥ ३ ॥ निन ॥ ॥ नेऊ कुं कु वि काये कुल की पाये झाँ

झी पाए ॥ विन्द ॥ ॥ नेऊ झाँझी कुं वरुं न निष्पद् झँझी पा
ए ॥ हृदि ॥ ॥ नेऊ घात्र अघात्रा मुखी वरुं नू पाये झाँझी
पाए ॥ नादि ॥ ॥ नेऊ झाँझीं सह नात्रि काये झाँझीं पाए
॥ लिं ॥ ॥ नेऊ कि लि र वि च्च का कु लु ये ऊः झी पा ॥ ए
॥ जानु ॥ ॥ नेऊ कुं लिखायी लख ॥ पाद ॥ हस्त ॥ ली
म ॥ पुनः ॥ हस्त ॥ दिदि रवा नं ॥ वि लोमः ॥ ॥ लि रवा

दिहस्तानं सृष्टिः ॥ ॥ हस्तादिस्त्रिंशत्कंष्टिः ॥ ॥ त्रिं
 श्वादिहस्तानं संहारा ॥ अथ पूर्वः षष्ठं गनः षष्ठः ॥
 सृष्टिः ॥ त्रिंशत् ॥ संहारा ॥ कुमल ॥ ॥ त्रिंशत्समयमन
 षष्ठः ॥ ॥ अथ द्वितीयं संलुप्तं स्थाप्य ॥ त्रिंशत् षष्ठः
 नं ॥ मूलं न चतुसं स्कारा ॥ नृप एष्विवीत स्वाय ३ ॥ त्रिं
 ज ॥ ॥ नृप एष्विवीत स्वाय वृक्षः लपाइकां ॥ गुद ॥ ॥

[illegible]

यवकुल ॥ ३॥ गु ७ ॥ ॥ ने ७ विद्या न स्वाय २ ॥ ने ७ विद्या न
स्वाधि फय विष्णु व ३ ॥ हृदि ॥ ॥ ने ७ लि व न स्वाय २ ॥ ने ७
लि व न स्वाधि फय नु दाय ३ ॥ लि ७ ॥ ०० नि वि न स्व न ॥ ॥
धय ॥ ला म वि ला म न ॥ ०० नि वि सि ह्मे न ॥ ॥ अथ नि
गी य म नु ले ह्मा य ॥ ष ७ ग ॥ ष ७ कु ॥ मा ल नि ॥ ष ७ द न
लि वि विद्या ॥ धा नि का ह्मे ॥ दा द न ॥ ग ॥ ष ७ ग ॥ नि र्वा ल ॥

अधो न ॥ व ७ ॥ व नि सि ३ ॥ ह का न ॥ सु का न ॥ सि डि ल श्री ॥
मू ल ॥ ष ७ ग ॥ ॥ काली मू ल ॥ ष ७ ग ॥ ॥ त्रि पु न ॥ मू
ल ॥ ष ७ ग ॥ ॥ अ न न नि न स रू प ल प ॥ ॥ सर्वा धि का न ॥
न वा सा म नु ल ॥ ह ह स ह अ ह न न रू प न ॥ या नि मु द ॥
हो न ॥ म हा मा या ॥ गु नु द क्रि ल ॥ रे न वे म थि न ष क्का
उ ग इ त्य लि या दि ना ॥ अ हा सि डि क नी द वी श्री कृ त्ति की
न मा म्य ह ॥ ॥ स्व स्ति वा च न प ॥ ० नू ॥ ह ला रि ष क ॥ अ न

निदर्शनं ॥ लाजापुष्पादिषु क ॥ लिष्य न का हात्रं ॥ ॥ सर्व
वित्रजनप्रसाद समर्थ ॥ नर्प्य ली ॥ हाश्च ॥ सिषया न स्नान
विय ॥ ॥ अथ सिष्यनयन स्नान ॥ स्वस्ति कं लिखेत् ॥ म
ध्य ॥ स एष यत् ॥ उग्रहृत्सह स्वाहा ॥ वीजा लिखेत् ॥ कृष्ण
जिनसयन स्नान कुमोनिधाय ॥ स र्प्या स्नान ॥ सिष्यन
यन ॥ चतुर्दिक् ॥ अष्ट पत्र पित्र च ॥ न लिखेत् ॥ कह

सुनिर्धेयं दक्ष प्रनयत् ॥ एतन्न ॥ ॥ पूर्व ॥ गीगाये २ ॥ य
मुना ॥ कीनार्क वाय २ ॥ कीनार्क वाय २ ॥ अक नाय २ ॥ वायु
की २ ॥ ॥ दक्षिण ॥ कुंजा कावली २ ॥ कोला किशादध्वर्क
वाय २ ॥ घुनार्क वाय २ ॥ नरु काय २ ॥ कर्कट काय २ ॥ ॥ उल
न ॥ कुंजा गं लुकी २ ॥ नर्मदा ये २ ॥ मध्वर्क वाय २ ॥ उल
र्क वाय २ ॥ पद्माय २ ॥ महापद्माय २ ॥ ॥ पश्चिम ॥ आ
युमुखी २ ॥ सर्वनीर्थय २ ॥ सुनार्क वाय २ ॥ दक्षिर्न वाय २ ॥ क्षी

रवपालाय २॥ कुलिकाय २॥ ॥ पुनः पलायनी पूजा ॥ नव
नाथन ॥ नेगगलनन्ददव ३॥ नेकुमुदानन्द ५॥ नेपयान
न्द ५॥ नेहेत्रवानन्द ५॥ नेकमलानन्द ५॥ नेगिवानन्द ५॥
नेगामानन्द ५॥ नेकुफानन्द ५॥ नेदवानन्द ५॥ त्रावाक
॥ धनु ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ ६ ॥ नेहं हस्वाहा ॥ स्तोत्र ॥ त्र
नकीनागगाऊनुखादि ॥ ॥ स्वप्नमनुप्रदानं ॥ ॥

कुं हिलि रत्नलपानये स्वाहा ॥ समयमन ॥ कुं सिद्धिचा मुपु
पत्री स्वाहा ॥ विसीष्टमन ॥ ॥ कुं स्वाहा ॥ निर्वीलमन
॥ ॥ सूर्यययिका त्रधात्राकुल प्रु सफधामकुलचतु
दिङ्गनक्षी कृष्णि ॥ ०० निसयनं ॥ तगा प्रागनु ल्हाय ॥
त्राधन कुमलकलसोदकनस्त्रापयित्वा ॥ वरु संवलीष्ट
ग्रन ॥ स्वप्नकथे ॥ ०० हा ०० हं ०० यन ॥ ०० हं ०० कि क

हृदयं ॥ संका नस्तु ॥ व्यासमंलुलसंस्काप्य ॥ ॥ अ
थ नित्याचली ॥ कथं कथं ॥ गुणमंलुल ॥ दवमंलुल ॥ मा
हं लु ॥ दाल ॥ पूजनं ॥ ॥ पुष्पाहाजनं ॥ पद्माहुतुनव
नाथादिहिः धारा न्यासादि ॥ साक्षपात्र ॥ पूर्ववत् ॥
दवाचली ॥ कृत्वा ॥ थक्क ॥ धनमनत्र ॥ ॥ ततो विषय
स्वेदिनस्त्रीः निर्मलनादि ॥ दीपलाह नकां कृत्वा ॥ पया

धाय यापय गार्हितस्वस्तिक निधाय ॥ ॥ अतिनामं
लुल त्रयं कृत्वा, तजसा च तन्मध्यं पद्ममंलुलं कृत्वा, सा
धयत् ॥ प्रथममंलुलस्त्वित्वा ॥ गुणलातिनीकनादि ॥ च
तुसंस्कात्रं ॥ नववर्कनादि ॥ दीपलाह नकां कृत्वा ॥ कुंजीं
प्रकनर बिखा ॥ तस्वाहा ॥ नारि ॥ वनिसिद्रयं, मूलसं ॥ त
न ॥ सितली पूजयत् ॥ ॥ मन्त्र ॥ तालचा ॥ स ॥ मन्त्र ॥ त्वा
य ॥ चतुसंस्कात्रं ॥ विषय रुक्मिस्वस्तिकं लिषत् ॥ पूजनं ॥

ॐ ह्रीं सः नमो नमो महादेव वाय २ ॥ ॥ रुक्मिण्युपतन
प्रमर्तुलताकाश ॥ ॐ ॐ महाकात्रिकाये ॐ ॐ नमो
प्रयाय ३ ॥ वध ॥ सोधयन् ॥ दादणी ॥ ग ॥ ष ॥ ग ॥ सोध ॥
ननसि नसि पूजनं ॥ ॥ निष्य रुक्मिण्युपतन ननसि कं
न दादणी यतु पुत्रं तिरि वि स्वाति विद्या ॥ ॥ ऊव ॥ धम्मी
य २ ॥ ॥ ख व ॥ न धम्मी य २ ॥ ऊव ॥ नि वा य २ ॥

॥ ख व ॥ ल क य २ ॥ ॥ मूल विद्या ॥ व नी सी ३ ॥ रु ६ स
६ ष ॥ ग ॥ ॥ गु नु मं लु ल सां ग पां ॥ न प्र पू ॥ ॥ आ वा ॥
॥ या नि मु डा प्र द णी य ॥ ॥ ल म य ॥ म नु ॥ ल ध नं ॥ पु नः
दि ती य मं लु लु लि त्वा ॥ सो ध य ॥ नु ए थी न त्वा य ३ ए थी
वि न त्वा य वृ ष ॥ ॥ ३ ॥ नु आ प न त्वा य ३ आ प न त्वा य वि
पु व ३ ॥ ॥ नु न ऊ न त्वा य ३ न ऊ न त्वा धि फ य नु डा य ३ ॥
॥ वे वा यु न त्वा य ३ वा यु न त्वा धि फ य ० ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ आकाशं तत्वाय ३॥ आकाशं तत्वाधिपय सदा शिवाय ३
॥ शिवाय ॥ विदुः ॥ हृदि ॥ नाहि ॥ लिंग ॥ जानु ॥ पाद ॥ हस्त ॥
ॐ यं हृदि ॥ ॥ पुनरुक्तादि शिवाय न संहात ॥ ॥
पुनः शिवादि अस्मात्कृती ॥ ॥ वतीति ॥ षडंगलम्ब
स्मृत ॥ लाम वि लामेन ॥ हस्त धयत ॥ ॥ शिवाय संस्मृत य
॥ मालीनी ॥ शदनाली ॥ त्रिविधा ॥ घो ॥ श्लिकाष्टक ॥ द्वादशी

ग ॥ षडंग ॥ षडङ्गि ॥ षडकु ॥ नुने ॥ हस्त ध्य ॥ मूल षडंगल
शिवाय संस्मृत ॥ ॥ पापहृत्कल ॥ कलसस्तनया चिंचीनी
काष्ट सफां गुलि प्रमाने मुर्द्धि हस्त ॥ ॥ पादपद्म काष्ट
सफां गुलि प्रमानं पादतल ॥ चतुर्विंशतिका वायुं २४ ॥
निष्प ॥ हितमादस ॥ कुमात्रिष्ट ॥ पंचवृत्त का ॥ पंचपुष्प
स्थान चक्र ॥ ॥ पापहृत्कल संस्तु ॥ नुने षडङ्गि ॥ ॐ नमः ॥

पापहृत्साय हूं रुट् स्वाहा ॥ हूं सो ॥ ॥ हिरवा ॥ विन्दु ॥ रु
दि ॥ नाहि ॥ गुम्फ ॥ जानु ॥ पाद ॥ हस्तयादु ॥ नृत्तमन्कुलानि
॥ लम्ब ॥ लीमविलामन ॥ नादयत् ॥ धूपयत् ॥ पूजयत्
लिष्य हिनलिक मीर्च लीकात्रयत् ॥ आवाक् ॥ यानि मुद्रा
॥ जाप ॥ ~~कुम्भा~~ स्वाहा ॥ अस्मा लुन १०८ हिनसिउपत् ॥ स
र्वपापहृत्साय मन्कु ॥ माहाकं सर्वपापहा ॥ ॥ स्तोत्र ॥ मा

लिनी ॥ महासाया ॥ नतापुष्पाङ्गुलि नवास्मा मूल ॥ ०० नि
दितीयमलुलविधिः ॥ ॥ नतात्रितीयमलुलहिल्ला ॥
नवास्मा ॥ नत्तपंचक ॥ अद्याजास्तु ॥ दादल हिन्रीकन्या
स ॥ ग्रन्थिन्यास ॥ सुसिक्किनि संहात्रकमल ॥ लम्बयत्
॥ नादयत् ॥ धूपयत् ॥ पूजयत् ॥ अथानकसंप्रवक्षामिक
मीर्चनं समासहेत् ॥ षडंगहृदयानि च वनि सिं न्यासं का
त्रयत् ॥ ग्रन्थिन्यासं नथाद्यात्रं दादलगीतकं । मालनी सदना

लाव. षट् द्दुतित्रल पंचक ॥ नवात्मानवघातासुं धाराश्चैव
त्रिविधतां । घातासुं कं त्रिद्वल्लुब्ध नृका नृवी विजृ पंचकं ॥ ज
त्रिद्वल्लुब्धं चर न्यासादिषा रा ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
दवीन हि क मी चर्च न रे व न् ॥ पुन व नि सिं न्यास ॥ ६९ ॥ ७० ॥
ने न न मा ए ग व नि ह ल क म ला ये ज्ञां ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥
सि त्र ॥ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

ज्ञां ज्ञां ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥
घाता मुखिव द्दु नू पा ये ज्ञां ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥
कात्रिका ये ज्ञां ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥
ये ज्ञां ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥
हस्त ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥
हस्त ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥

लामनलधयन ॥ ॥ अथ ग्रन्थि न्यासनलधयन ॥ न
 र्हं ननन ग्रन्थि पाददयाषां ॥ पानलसनिषां ॥ नरुहं वा
 मग्रन्थि कनिदया ॥ ॥ नरुहं कालग्रन्थि गुल्फदया ॥
 ॥ नरुहं कामग्रन्थि लिंगत्याग ॥ नरुहं जोडग्रन्थि जंघ
 दया ॥ ॥ नरुहं पिलुग्रन्थि मडुल्लान ॥ ॥ नरुहं जो
 डग्रन्थि उतुदया ॥ ॥ नरुहं वृक्षग्रन्थि वृक्षल्लान ॥ ॥
 नरुहं अष्टग्रन्थि उतुदया ॥ ॥ नरुहं सूर्यग्रन्थि नाहो ॥ ॥

नरुहं सामग्रन्थि पृष्ठमध्व ॥ ॥ नरुहं पालग्रन्थि उद
 र ॥ ॥ नरुहं जीवग्रन्थि हृदय ॥ ॥ नरुहं विष्णुग्र
 न्थि कल ॥ ॥ नरुहं नुडग्रन्थि तानुमध्व ॥ ॥ नरुहं
 हं ॥ नरुहं नग्रन्थि लित्रल्लान ॥ ॥ नरुहं सदातिवग्र
 न्थि मेरुर्द्धिल्लान ॥ ॥ नरुहं न्यासनलधयनिकायपा
 ॥ ॥ उदयाकनीलाद ॥ ॥ नरुहं न्यासनलधयनिकायपा
 नल्लान गतं न्यानं ग्रन्थि पा ॥ ॥ नरुहं न्यासनलधयनिकायपा

सन अमन खं प्रसाधयत् ॥ ॥ वाचा सिद्धिः पत्र को रमा ह्मा ती
 वृत्त ना हवेत् ॥ न्या सरु लं ॥ ॥ अथ अधा नाकुल ॥ ॥ अधय
 त् ॥ ॥ नृज नमस्तु नु ड नूपकः अक्ता यरुट् ॥ ॥ नृज अधा न जां अं
 गुष्ठा खां नमः ॥ ॥ नृज अधा नं जीं तं नी लां २ ॥ ॥ नृज अधा न धा नं क
 ने हूं म ॥ ॥ मा लां २ ॥ ॥ नृज सर्व नः सर्व सर्व जे अ नामिका खां
 २ ॥ ॥ नृज जीं नृ नृ या य वी षट् ॥ ॥ नृज नमस्तु नु ड नूपकः अक्ता

यरुट् ॥ ॥ नृज अधा नं न्या साय वलि गृह २ खा हा ॥ ॥ अधा नाकुल
 न्य सनि खं सक्ती यु ध निवा न जी ॥ ॥ नृज रुं सः जीं क नि सा ये वो
 षट् ॥ ॥ ३ ॥ ॥ नृज नमस्तु नु ड नूपकः अक्ता य ३ ॥ ॥ नृज अधा न जां
 रु द या य २ ॥ ॥ नृज अधा न जीं नि न स खा हा ॥ ॥ नृज अधा न धा
 नं क न हूं नि खा ये ३ ॥ ॥ नृज सर्व नः सर्व सर्व जे क व चा य हूं
 ॥ ॥ ॥ अथ दा द लां ग न्या स ॥ ॥ ॥ नृजीं लां कुं लो ॥ ॥
 नृज स्तु सिद्धा ये पा द द या पा द ॥ ॥ नृज स्तु म डा ये जा न

दयाः पां पू ॥ नेत्रं स्निग्धं विमुक्तं त्राये उन्नतं दयाः पां पू ॥ नेत्रं स्निग्धं
लक्ष्मीं मुक्तं पां पू ॥ नेत्रं स्निग्धं दिक्काये ना हो पां पू ॥ नेत्रं स्निग्धं मा
लिनीं हृदयाय पां पू ॥ नेत्रं स्निग्धं जिवाये कल पां पू ॥ नेत्रं
स्निग्धं वसुमुखाये मुखे ३ ॥ नेत्रं स्निग्धं नासां तु गायै नासा पुन द
या पां पू ॥ नेत्रं स्निग्धं कर्कशं काये कर्कशं दयाः पां पू ॥ नेत्रं स्निग्धं
रुत्रिकं ज्ञायै यज्ञं पां पू ॥ नेत्रं स्निग्धं महामुखो जितसखा

हा ॥ नृशब्दां मन्त्रां पुष्पं पां ॥ प्रलवायकथा ॥ गानध
 क्रवर्त्तु स ॥ मुद्रनत् ॥ रुगुहेनववीज ॥ तस्या
 धा ह्यं विष्णु कां धु ॥ कुरु ॥ उद्धृत्यं प्रयत्न न स्मन पुदा
 दस पुच ॥ दा ॥ द ॥ सखन ह द न ह दित वं प्रयत्न नः ॥
 जाका न नाप मृ त्यु न वि द्युं तस्य जायत ॥ सर्व व्या धि वि
 नी म्भु का नु उ ला का हि सा ध कः ॥ ॥ नृशब्दां सर्वज्ञाता
 न ह द या य ॥ पां ॥ ॥ नृशब्दां नृ म त न जा मा लि नी मि

फि ॥ लित्रसस्या हा ॥ ॥ नृजस्तुं च वेदवदनी च नादिवा
 क्षये लिखाये वोषट् ॥ नृजस्तुं वजुनिवजुधनाये स्वत
 नृकवचाय हूं पां पू ॥ नृजस्तुं तावानित्यत्र लुफ हा की
 संहस्र नृजाम्बिकाये त्रिनृ नृपाये वषट् ॥ नृजस्तुं न
 मस्तु तं च न क हा किं हूं म हा पां पता फाय स ह म्रा
 काय हूं रुट् पां पू ॥ हूं यां षं ग न्या स ह्य पां पू ॥ ॥

नवं षडंग ध्यानं मन्त्रिमादिकसिद्धिदं ॥ लिलामयवि
षिसमार्फः ॥ ॥ माहिनीं ललामय ॥ नूं जीं श्रीं कूं कूं
नंनादि न्ये निखायांपां पू ॥ क्षीं कूं श्रीं जीं नूं ॥ च स पा
लस ॥ ॥ ने ज थै ग्रस नी ऊ ऊ वि जा मा ला यां पां पू ॥ म ना
र्क रा व र्ति नां ॥ ने ज सं नि व लि ए र्व नि त्रा मा ला यां पां पू
॥ म ना ग व र्त्त ॥ ने ज मुं प्र ति ह्य ये द किं ल नि त्रा मा ला
यां पां पू ॥ म ना व र्त्त न ॥ ने ज ठं वि द्या ये उ रु न नि त्रा मा ला

शां पां ए॥ मनां गमवर्त्तन॥ नेऊँ ह्यन्त्ये प ह्यिम लि जा
मालायां पां ए॥ कजावर्त्तिना॥ नेऊँ च वा मु लुये ह
नीयला च न पां ए॥ उर्द्धत्रयशा॥ नेऊँ प्रियदर्शनीन ग्र
हया पां ए॥ बहदायादिला च नयात्रक्षी क कत्र ८८ ॥
॥ नेऊँ लीं नात्रायली कर्त्तु विवत्रया पां ए॥ अं गुलिप्र
क प नात्र ॥ नेऊँ ऊँ भादनीद कि ल क ८८ ह्यन पां ए॥

हस्तमपत्रन॥ नेऊँ ऊँ प्रहाये वामक ८८ ह्यन पां ए
॥ वामहस्तमपत्रन॥ नेऊँ ०० पुञ्ज ह्यकि ना ह्यपुत्रद
य पां ए॥ सुलादक ल न॥ नेऊँ व वज्रिणी व क पां ए
॥ हस्तमपत्रन॥ नेऊँ क क टा ये ड ह्यद य पां ए॥ त्रय
या॥ नेऊँ रव का लि का ये उर्द्ध द ह्यन प को पां ए॥ त्रय
या॥ नेऊँ गं लि वा ये अ ८८ द ह्यन प को पां ए॥ ह्यनया ॥ ३

ॐ घं घा षा ये उ र्द्धा ष पां पू ॥ ० ॥ पुष्पु तु सिस ॥ ने ज दं वी ना
ये ज्ज ॥ १ ॥ ष पां पू ॥ का पुष्पु तु सिस ॥ ने ज ० ० मा या ये जि
का यां पां पू ॥ जि का स ॥ ॥ ने ज ज्ञं वा ॥ ग ॥ १ ॥ वा चि का यां
पां पू ॥ स्प ॥ न न ॥ ॥ ने ज वं लि खि वा रु न्ये क ॥ १ ॥ पां पू ॥
प्रा क्त न न ॥ ॥ ने ज हं ली ष ली द कि ल वा रु नि ष न पां पू
॥ प्रा क्त न न ॥ ॥ ने ज यं वा यु व ग म ये वा स वा रु नि ख न

पां पू ॥ प्रां क्त न न ॥ ॥ ने ज उं ना मा ये द कि ल वा रु द ॥ १ ॥
पां पू ॥ ज व ल क द ॥ १ ॥ ॥ ने ज दं वि ना य का ये वा स वा रु
द ॥ १ ॥ पां पू ॥ ॥ १ ॥ व ल क द ॥ १ ॥ ॥ ने ज ० ० पू र्ण मा ये क न
न ल द या ३ ॥ विं दु ना ॥ ने ज ज्ञं ज्ञं का लि नी द कि ल रु स्तां
गु लि षु पां पू ॥ स मु प स्प ॥ १ ॥ ल ना ॥ ने ज ज्ञं कु र्व ली वा
म रु स्तां गु लि षु पां पू ॥ स मु प स्प ॥ १ ॥ ल ना ॥ ने ज नं दी प
नी रि ष न द ॥ १ ॥ पां पू ॥ द कि ल रु हा व ना न् ॥ ने ज ज्ञं ज्ञं य

ता न् ॥ नेऊं आं आमा हो पय दय २ ॥ चुचुक पल ना ॥ ॥
नेऊं षं लम्बोदये डे दल पा पू ॥ तुलु विमर्दिन ॥ ॥ नेऊं कं
संज्ञा निःस्थे ना हि मः ॥ ग्राम ना ॥ ॥ नेऊं मं महाका
ल्ये निरुध्व पां पू ॥ तुलु स ॥ नेऊं लं केशु मालिनी युक् ३
॥ लिं ॥ ॥ नेऊं अं लुका दवी ३ ॥ अउ या ॥ नेऊं तं ता ना
दये डे दय ३ ॥ नय या ॥ ॥ नेऊं उं हाना ये दक जानो ३
मि ॥ चतु विन्दु नाद लिखन न ॥ ॥ नेऊं क्रिया ये वा म जानो

पाङ्कजी ॥ ॥ नेत्रं ज्ञां गायत्री दक्षिणं घायां २ ॥ त्रयया ॥ ॥
नेत्रं ज्ञां सावित्री वामं ज्ञायां ३ ॥ त्रयया ॥ ॥ नेत्रं दं दह
न्ये दक्षिणं पाद ३ ॥ प्राङ्कना ७ ॥ ॥ नेत्रं रुं रुं स्का त्रिल्ये
वामं पाद ॥ प्राङ्कना ७ ॥ ॥ नेत्रं नुं हृदयाय २ ॥ नेत्रं नुं
लिङ्गस्य २ ॥ नेत्रं नुं लिङ्गाय वीष ६ ॥ नेत्रं नुं कवचाय
६ ॥ नेत्रं नुं नैऋत्याय वष ६ ॥ नेत्रं नुं नैऋत्याय

[illegible]

खवमिखा ॥ ॥ नुं ऊ उं अमजी सदक क ॥ ३ ॥ क ॥ ॥
ने ऊ ऊं अर्षी सुवाम क ॥ ॥ वासे ॥ ॥ ने ऊ मं हन नु
ना सद किल नासां पूट ३ ॥ ने ऊ अर् अति था सवाम नासां
पुन ३ ॥ ने ऊ ० ह्मा नु दक ग ॥ ॥ ३ ॥ ने ऊ ० हन वाम ग
॥ ॥ ३ ॥ ने ऊ नुं म ली स अ ॥ ॥ द ल न प को ३ ॥ ने ऊ नुं
हो की स उ ड द ल न प को ३ ॥ ने ऊ गों स यी जा ग अ ॥ ॥
जी ३ ॥ ने ऊ गों अ नु ग्र ही स उ डी ३ ॥ ने ऊ अं कू म ल

नानुम ॥ ॥ नुं ऊ अः महा स न जि का यां ३ ॥ ने ऊ कं को
द द क ल्कं ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ने ऊ खं च लु द किल बा ह द ॥ ॥ ३ ॥
ने ऊ गं प्र च लु द क ह ल म नि वं ॥ ॥ ३ ॥ ने ऊ यं सि व द क ह ल ॥ ॥
ने ऊ ० न क नु ड द किल क ला ह ति न ख पु ३ ॥ ने ऊ चं कू म वा
म ल्कं ॥ ॥ ३ ॥ ने ऊ छं न क न नु वाम बा ह द ॥ ॥ ३ ॥ ने ऊ जं द
नु म्बु ख वाम ह ल म नि वं ॥ ॥ ३ ॥ ने ऊ मं अ नु सु वाम ह ल ॥ ॥ ३ ॥

नेज हं ल मीठा वा मरुत कला गुलि पु नष पु पां प ॥ नेज
टं सा मय न द कि ल सि चि ॥ नेज ० लां गुलिं स द कि ॥
नो वा द ३ ॥ नेज ७ ज नु क द कि ल जा नो ३ ॥ नेज रं अर्द्ध ना
त्रि स द क र्म ध ३ ॥ नेज लं उ मा का न द क पा दा हु लि न वि पु
३ ॥ नेज नं आ षा री ल वा म सि चि ३ ॥ नेज थं दि लि ल वा मा
नु वा न ३ ॥ नेज दं धा गि ए वा म जा नो ३ ॥ नेज धं मी न वा म
जं ध ३ ॥ नेज नं म घ पा दा हु लि न वि पु ३ ॥ नेज पं ला हि न द

दि न पा ॥ नेज हं लि लि ल वा म पा ॥ नेज वं च
ग ल लु प ए वं ३ ॥ नेज हं दि न लु ना हि म ॥ नेज
मं म हा का ल ह द य ३ ॥ नेज यं वा ली ल ल चि म ॥ नेज नं
नु ज न क ३ ॥ नेज लं पि ना की ल मा स ३ ॥ नेज वं र व आ न न
स्ना यु ३ ॥ नेज लं व को न द अ लि म ॥ नेज धं ल थ ना न
द म क्ती यां ३ ॥ नेज सं ह गु लु क ३ ॥ नेज हं ली गु ली स प्रा
ल धा न ३ ॥ नेज कं स व ली जा द पा दा गु ए गु कि म ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कलुषादिनागइवः ग्रहादितिः न हवदि डव नस्य
वादनालीनानीनगाः ॥ न्यासकृतं ॥ अथ षष्ठीं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नक कुरुमुखी देवी मां मा पश्य नुष्ण प्रवः श्री हृदय दूनी
हृदय ३ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमां सर कली कपास्तव हांग धात्रिलीहनरदहरधमर
पचरममलपुनृग्रसरमात्ररहंररुद्रलिनादूनीलि

सर्वदायषीसर्वयुधविमर्दनी ॥ ॥ नेऊवा (गणपती
पूँ नल्लगगल लोक हा गगर्ह गमि नी गगल लोकत्र
मृ नल्ल वा नली गगल नन्द दव गगल म्वा च तुः ष
ष्टि लु क काटि सिद्धि च तुः षष्टि लु क काटि सिद्धि च तुः
षष्टि लु क काटि यागि ३ ॥ ॥ ल ला ट ॥ नेऊ माया येसूँ
नल्ल स्व गी लोक हा गगर्ह गमि नी स्व गी लोकत्र मृ नल्ल

अत्रिली स्व गी नन्द दव स्व गी म्वा वनी सत्र लु क काटि सि
द्धि वति लु क काटि यागि ३ ॥ नासिका वकु ॥ ॥ नेऊ
मा रु नी पूँ नल्ल पवन ला क हा गगर्ह गमि ला पवन
लोकत्र मृ नल्ल संक्षु नली पवनानन्द दव पवनाम्वा धा
उल्ल लु क काटि सिद्धि पाउल लु क काटि यागि ३ ॥ कल
॥ नेऊ हाना येसूँ नल्ल मर्ह ला क हा गगर्ह गमि नी मर्ह
लु कत्र मृ नल्ल संक्षु नली मर्हानन्द दव मर्हाम्वा अल्ल

ककाटि सिद्ध अहलक कोटि यागिनि ॥ रुदय ॥ ॥ ने
जीं गायत्री हूँ न त्र नाग लोक हाग गर्ह गामिनी नाग
लोक अमृत संवात्र नागानन्द दव नागाम्या च स्वा
मित्र ककाटि सिद्धि च वा मित्र कयागिनि ॥ नाहि ॥
ॐ जीं हूँ न त्र वृ नु नील अनक लोक हाग गर्ह ग
मिनी अनक लोक अमृत संवात्र निश्च नंका नन्द

भव अनंका म्या अनक लक ककाटि सिद्ध अनंद ककाटि
यागिनि ॥ मृदु स्मिने ॥ ॐ जीं हूँ न त्र वृ नु नील अनक लोक हाग गर्ह ग
मिनी अनक लोक अमृत संवात्र निश्च नंका नन्द
॥ गगलमदिसमस्तपुत्रु वन व्यापितं
रुलं पातकं नास्ति ते सर्वे ल
ॐ कं ॥ ॥ अथ नवात्मा ॥ ॐ जीं हूँ न त्र वृ नु नील अनक लोक हाग गर्ह ग
मिनी अनक लोक अमृत संवात्र निश्च नंका नन्द